श्री सदगुरू देवाय नमः ओ३म् जय माता दी
सीताराम बाबा जी जय बाबा की श्याम बाबा
उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं,यःशोकवह्निं जनकात्मजायाः आदाय तेनैव ददाह लंकां,नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्
मनोजवं मारुत तुल्य वेगं,जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्रीराम दूतं शरणं प्रपद्ये
रंगों का पर्व होली की हार्दिक बधाई
केन्द्र व उत्तराखण्ड सरकार से विज्ञापन मान्यता प्राप्त
हिन्दी सान्ध्य दैनिक

# उत्तरांचल दर्पण

♦वर्ष 26 ♦अंक 146 ♦पृष्ठ 8 ♦रुद्रपुर(ऊधमसिंहनगर) ♦मंगलवार ♦3 मार्च 2026 ♦मूल्य दो रूपया होली विशेषांक*

# ‘धाकड़ धामी’ ने तैयार किया कांग्रेस की समाप्ति का ‘ब्लूप्रिंट’

## कांग्रेसी दिग्गजों के साथ 11 विधायक थामेंगे भाजपा का दामन,सकते में कांग्रेस का प्रदेश नेतृत्व, कांग्रेस आला कमान की भी बढ़ी बेचैनी

देहरादून(होली ब्यूरो)। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कांग्रेस मुक्त भारत के सपने को साकार करने के लिए उत्तराखंड में एक अहम ताना-बाना बुना है और अगर सब कुछ ठीक-ठाक रहा, तो सत्ताइस के विधानसभा चुनाव के पहले मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस की कमर टूट सकती है ।राजधानी में मौजूद सुविज्ञ सूत्रों की माने तो कांग्रेस के 11 विधायक धाकड़ धामी के निरंतर संपर्क में है और सत्ताइस के विधानसभा चुनाव के पहले दल बदल की सहमति दे चुके हैं। हासिल जानकारी के मुताबिक राज्य के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी इस दल बदल के लिए अपने हालिया



दिल्ली दौरे में प्रधानमंत्री मोदी एवं गृहमंत्री नरेंद्र मोदी की सहमति भी प्राप्त कर चुके हैं तथा भाजपा के नवनियुक्त अध्यक्ष ने भी दल बदल करने वाले सभी विधायकों को भाजपा का टिकट देने का पूर्ण आश्वासन दे दिया है। सूत्र बताते हैं कि उत्तराखंड के मुख्यमंत्री द्वारा दल बदल करने वाले कांग्रेसी विधायकों को भाजपा का टिकट देने के अलावा यह आश्वासन भी दिया गया है कि किन्हीं कारणवश अगर वह विधानसभा चुनाव न भी जीत पाए, तो उन्हें चुनाव के बाद लाभ एवं रसूख के किसी पद पर एडजस्ट किया जाएगा । सीएम धामी के विश्वस्त रणनीतिकारों के अनुसार विधानसभा चुनाव के पहले कांग्रेस की बड़ी टूट का पूरा ब्लूप्रिंट तैयार कर लिया गया है और उपचुनाव के चक्कर से बचने के लिए सभी कांग्रेसी विधायकों का भाजपा प्रवेश विधानसभा चुनाव के ऐन तीन- चार माह पहले कराया जाएगा ,ताकि सांप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे। बताया जा रहा है कि जिन विधायकों के नाम चर्चा में हैं, उनमें ऐसे नेता भी शामिल हैं जो पूर्व में मंत्री और विधानसभा अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं तथा वर्तमान में कांग्रेस के टिकट पर विधायक हैं। इस संभावित राजनीतिक बदलाव की सुगबुगाहट से कांग्रेस प्रदेश नेतृत्व में हलचल बढ़ गई है। वहीं नई दिल्ली स्थित पार्टी (शेष पृष्ठ सात पर)

### उपचुनाव के झंझट से बचने की रणनीति

कांग्रेस के विधायकों के पाला बदलने के मास्टर प्लान में सीएम धामी की रणनीतिकारों ने विशेष ध्यान रखा है कि भाजपा को उपचुनावों का सामना न करना पड़े। यदि विधायक चुनाव से बहुत पहले दल बदल कर लेते तो उन सीटों पर उपचुनाव होते, जिससे भाजपा को अतिरिक्त आर्थिक और राजनीतिक ऊर्जा खर्च करनी पड़ती। अब ब्लूप्रिंट के अनुसार, सभी 11 विधायक चुनाव के ऐन पहले पाला बदलेंगे, जिससे सीधे 2027 के महासंग्राम में भाजपा प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतरेंगे। यह ‘सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे’ वाली नीति कांग्रेस को पूरी तरह निहत्था करने की एक सोची-समझी साजिश मानी जा रही है।

# बगावत पर झुकी भाजपा, पांडे को कैबिनेट मंत्री का तोहफा

## कद्दावर नेता की नाराजगी दूर करने के लिए पार्टी आलाकमान ने लिया फैसला

देहरादून (होली संवाददाता)। उत्तराखंड की राजनीति में होली से ठीक पहले एक बड़ा उलटफेर देखने को मिला है। मुख्यमंत्री के साथ लंबे समय से चल रहे अंदरखाने गतिरोध के बाद कद्दावर नेता अरविंद पांडे ने अपनी ही पार्टी के खिलाफ बगावत का बिगुल फूंक दिया था, जिसके बाद पार्टी ने उन्हें कैबिनेट मंत्री पद का तोहफा देकर शांत किया है। होली मिलन समारोहों के बीच अचानक पांडे द्वारा एक गुप्त बैठक बुलाकर अपना अलग खेमा घोषित कर देने से भाजपा के शीर्ष नेतृत्व में हड़कंप मच गया था। बगावत के इस तेवर ने सरकार की



स्थिरता पर सवालिया निशान लगा दिए थे। सूत्रों के अनुसार, अरविंद पांडे के इस कदम से पार्टी को भारी नुकसान का डर सताने लगा था, खासकर जब राज्य में होली का माहौल था। दबाव में आई पार्टी ने रात भर चली बैठकों के बाद एक चौंकाने वाला फैसला लिया और अरविंद पांडे को फिर से कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ दिलाने की घोषणा कर दी। बताया जा रहा है कि पांडे ने बगावत के बदले सीधे कैबिनेट पद की मांग की थी, जिसे पार्टी आलाकमान ने स्वीकार कर लिया। यह फैसला पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए किसी बड़े झटके (शेष पृष्ठ सात पर)

# होली मिलन में रंगों की जगह फाइलों की बौछार

देहरादून (होली संवाददाता)। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में आयोजित एक हाई-प्रोफाइल होली मिलन समारोह उस समय रणक्षेत्र में बदल गया, जब सत्ताधारी दल के दो कद्दावर गुटों के बीच गुलाल के बजाय सरकारी फाइलों की बौछार होने लगी। मामला तब बिगड़ा जब एक गुट के नेता ने दूसरे गुट के नेता पर ‘अनदेखी’ का




आरोप लगाते हुए उस पर रंग डालने के बजाय सीधे विकास कार्यों से जुड़ी लंबित फाइलें फेंक कर मारीं। सूत्रों के मुताबिक, समारोह में मौजूद (शेष पृष्ठ सात पर)

# विकास शर्मा को मिलेगी विधायक की टिकट

## भाजपा हाईकमान के सर्वे में विकास शर्मा का नाम सबसे ऊपर

रुद्रपुर(होली ब्यूरो)। नगर निगम क्षेत्र में अपने एक वर्ष के कार्यकाल के दौरान मेयर विकास शर्मा द्वारा कराए गए ताबड़तोड़ विकास कार्यों ने शहर की तस्वीर बदल दी है। जहां आम जनता उनके कामों से संतुष्ट और उत्साहित नजर आ रही है, वहीं भाजपा हाईकमान भी उनकी कार्यशैली से प्रभावित बताया जा रहा है। “एक साल बेमिसाल” का नारा अब शहर की चर्चा बन चुका है। होली से पूर्व भाजपा हाईकमान द्वारा आगामी विधानसभा चुनाव के सम्भावित प्रत्याशियों के लिये कराये गये सर्वे में मेयर



विकास शर्मा का नाम सबसे ऊपर गया है। जिसका मुख्य आधार नगर निगम के विकास कार्यों को लेकर समाज के विभिन्न वर्गों से उन्हें मिल रहा व्यापक जनसमर्थन बताया जा रहा है। नगर निगम के 40 वार्डों के पार्षदों में विपक्षी दलों से जुड़े प्रतिनिधि भी खुलकर उनकी कार्यप्रणाली की सराहना कर रहे हैं। मेयर शर्मा ने बिना दबाव में आए शहर को स्वच्छ, सुंदर और व्यवस्थित बनाने के लिए कई निर्णय लिए। शुरुआत में कुछ फैसलों का विरोध भी हुआ और लोगों ने उन्हें जल्दबाजी में लिया गया बताया, लेकिन अब उनके दूरगामी सकारात्मक प्रभाव दिखाई देने(शेष पृष्ठ सात पर)

# गंगवार के दबाव में सौरभ बहुगुणा ने मंत्री पद छोड़ा

सितारगंज(होली ब्यूरो)। सितारगंज से बड़ी राजनीतिक हलचल सामने आई है। प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री एवं सितारगंज से विधायक सौरभ बहुगुणा ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है। इस्तीफे की सूचना फैलते ही उनके आवास पर समर्थकों का भारी जमावड़ा लग गया और कार्यकर्ताओं



ने उनसे निर्णय वापस लेने की अपील की।प्रारम्भ में श्री बहुगुणा ने समर्थकों से बातचीत करने से इनकार कर दिया, लेकिन कार्यकर्ताओं के बढ़ते दबाव और भावनात्मक अपील के बाद वे बाहर आए और समर्थकों को पूरी स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि भाजपा नेता सुरेश गंगवार पिछले कई दिनों से उन पर मंत्री पद छोड़ने का दबाव बना रहे थे।समर्थकों द्वारा कारण पूछे जाने पर श्री बहुगुणा ने कहा कि गंगवार का आरोप है कि उनकी वजह से वे या उनके परिजन जिला पंचायत अध्यक्ष नहीं बन पाए। गंगवार का कहना था कि यदि वे चाहते तो जिला पंचायत अध्यक्ष बन सकते थे। श्री बहुगुणा ने बताया कि गंगवार आरोप लगा रहे हैं कि उन्होंने पुष्कर सिंह धामी के साथ मिलकर जिला पंचायत अध्यक्ष(शेष पृष्ठ 7 पर)

# सीएम धामी ने किया उत्तराखंड में शराब मुक्त होली का ऐलान

देहरादून(होली ब्यूरो)। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने इस बार होली के त्यौहार को लेकर एक बेहद चौंकाने वाला, साहसिक और ऐतिहासिक फैसला



सुनाया है, जिसने पूरे राज्य के राजनीतिक और सामाजिक गलियारों में हलचल मचा दी है। मुख्यमंत्री ने आधिकारिक तौर पर घोषणा की है कि इस साल राज्य में होली के दिन ‘शराब मुक्त होली’ मनाई जाएगी। देवभूमि की गरिमा, पवित्रता और राज्य की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का कड़ा हवाला देते हुए, उन्होंने होली के अवसर पर शराब की बिक्री, स्टॉक और सेवन पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया है। यह नियम(शेष पृष्ठ 7 पर)

# नेता प्रतिपक्ष आर्य के आवास पर ईडी का छापा

हल्द्वानी(होली ब्यूरो)। उत्तराखंड की राजनीति में उस समय हड़कंप मच गया जब होली के त्यौहार से ठीक एक दिन पहले, प्रवर्तन निदेशालय की टीम ने नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य के हल्द्वानी स्थित आवास पर अचानक छापेमारी की। सुबह-सुबह हुई इस कार्रवाई से न केवल कांग्रेस खेमे में सन्नाटा छा गया, बल्कि भाजपा के गलियारों में भी तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गईं। ईडी की टीम पुख्ता सबूतों की तलाश में घर के चप्पे-चप्पे की तलाशी ले रही थी, लेकिन जो मिला, उसने खुद जांच अधि



कारियों को हैरान कर दिया। सूत्रों के अनुसार, ईडी को अंदेशा था कि आने वाले विधानसभा चुनावों को देखते हुए हल्द्वानी स्थित आवास पर भारी मात्रा में अवैध नकदी का स्टॉक किया गया है। लेकिन, घंटों चली गहन छानबीन के बाद भी अधिकारियों को नोटों की एक भी गड्डी हाथ नहीं लगी। इसके विपरीत, घर के स्टोर रूम से ऑर्गेनिक गुलाल के दर्जनों डिब्बे, फूलों के रंग, और हर्बल रंगों के पैकेट मिले, जो यशपाल आर्य ने अपने क्षेत्र के कार्यकर्ताओं और समर्थकों के साथ होली खेलने के लिए मंगवाए थे। इस घटना के बाद नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने चुटकी लेते हुए कहा ईडी को जो रंग मिला है, वह तो वैसे भी जनता के (शेष पृष्ठ सात पर)

# भाजपा से किच्छा में चुनाव लड़ेंगे ठुकराल

## चुनौती तो बहाना है, दरअसल ठुकराल की किच्छा में एंट्री की वजह से रुद्रपुर की ओर दौड़े बेहड़

रुद्रपुर/किच्छा(होली ब्यूरो)। होली से पहले ही तराई की राजनीति में ऐसा सियासी गुलाल उड़ना शुरू हो गया है कि चारों ओर बस एक ही चर्चा है कि चुनावी रंग किस पर चढ़ेगा। चर्चाएं तेज हैं कि राजकुमार ठुकराल की संभावित किच्छा एंट्री ने पूरे राजनीतिक समीकरण बदल दिए हैं। माना जा रहा है कि इसी "ठुकराल फैक्टर" को भांपते हुए तिलक राज बेहड़ ने रुद्रपुर से चुनाव लड़ने की तैयारी तेज कर दी है। होली के मौसम में आई यह खबर तराई की सियासत में धमाकेदार मोड़ के रूप में देखी जा रही है। सूत्रों के अनुसार भारतीय जनता पार्टी किच्छा विधानसभा सीट पर बड़ा प्रयोग करने की रणनीति पर विचार कर रही है। पार्टी का आकलन है कि मौजूदा समय में किच्छा सीट आसान नहीं है। यहां कांग्रेस विधायक बेहड़ की मजबूत पकड़ बनी हुई है, जबकि पूर्व भाजपा विधायक राजेश शुक्ला के खिलाफ स्थानीय स्तर पर विरोध की चर्चाएं भी सुनाई देती रहती हैं। ऐसे में भाजपा नया चेहरा उतारकर मुकाबले को नया मोड़ देने की रणनीति पर काम कर सकती है।राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि ठुकराल की छवि जुझारू, संघर्षशील और जन-जन से जुड़े नेता की है। यदि वे किच्छा से मैदान में उतरते हैं तो मुकाबला सीधा और बेहद कड़ा हो सकता है। यही संभावना किच्छा की राजनीति को और रोचक बना रही है। सियासी चर्चाओं के मुताबिक भाजपा की संभावित रणनीति को भांपते हुए बेहड़ ने राजनीतिक दूरदृष्टि दिखाते हुए अपना फोकस रुद्रपुर की ओर कर लिया है। माना जा रहा है कि यदि ठुकराल किच्छा से चुनाव मैदान में उतरते हैं तो मुकाबला बेहड़ के लिए कठिन हो सकता है। ऐसे में सीट बदलना एक रणनीतिक कदम माना जा रहा है। रुद्रपुर सीट का इतिहास भी बेहड़ के राजनीतिक सफर से जुड़ा रहा है। वे यहां प्रभावशाली रहे, लेकिन ठुकराल से दो बार चुनाव हार चुके हैं। इसके बाद उन्होंने किच्छा का रुख किया और वहां भाजपा प्रत्याशी राजेश शुक्ला को हराकर जीत दर्ज की। तराई क्षेत्र में उनका जनाधार आज भी मजबूत माना जाता है और समर्थक उन्हें "तराई का शेर" कहकर संबोधित करते हैं।राजनीतिक विश्लेषण यह भी संकेत देते हैं कि बेहड़ को लगता है कि रुद्रपुर में भाजपा के भीतर गुटबाजी उनके लिए अवसर बन सकती है। मौजूदा भाजपा विधायक शिव अरोड़ा और स्थानीय राजनीतिक समीकरणों को लेकर चल रही चर्चाओं को भी वे अपने पक्ष में माहौल मान रहे हैं। उन्हें विश्वास है कि वे इस स्थिति का चुनावी लाभ उठा सकते हैं। हालांकि राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि रुद्रपुर को हल्के में लेना बड़ी भूल हो सकती है। यह सीट लंबे समय से भाजपा का मजबूत गढ़ रही है। संगठनात्मक मजबूती, बूथ स्तर की पकड़ और चुनावी प्रबंधन भाजपा की ताकत मानी जाती है। शिव अरोड़ा को भी एक चतुर और जमीन से जुड़े नेता के रूप में देखा जाता है, जो चुनावी समीकरणों को अपने पक्ष में मोड़ने की क्षमता रखते हैं। होली के रंगों के बीच सियासत की यह गर्माहट और तेज महसूस की जा रही है। गलियों में अबीर-गुलाल उड़ रहा है, वहीं राजनीतिक चौपालों में रणनीति और संभावनाओं की चर्चा घुल चुकी है। सबसे बड़ा सवाल यही है ख़ क्या ठुकराल फैक्टर चुनावी रंग बदल देगा? क्या बेहड़ की सीट बदलने की रणनीति सफल होगी? क्या भाजपा किच्छा में नया प्रयोग कर खेल पलट देगी? और होली के बाद तराई की राजनीति किस रंग में रंगी दिखाई देगी?फिलहाल इतना तय है कि इस बार होली सिर्फ रंगों की नहीं, बल्कि सियासी संदेशों की भी है। तराई की राजनीति में रंग उड़ चुका है ख़ अब देखना है कि चुनावी रण में किसका रंग सबसे गहरा चढ़ता है।

# ठुकराल की एंट्री से बदले समीकरण,कांग्रेस से अजय तिवारी मैदान में

किच्छा(होली ब्यूरो)। किच्छा विधानसभा सीट पर चुनावी सरगर्मियां तेज हो गई हैं। भारतीय जनता पार्टी हाईकमान द्वारा किच्छा सीट से राजकुमार ठुकराल को प्रत्याशी बनाने के सहमति के बाद स्थानीय राजनीति में नए समीकरण बनते नजर आ रहे हैं। ठुकराल के किच्छा के मैदान में उतरते ही राजनीतिक हलकों में हलचल बढ़ गई है। बताया जा रहा है कि ठुकराल की सक्रियता के बाद मौजूदा विधायक तिलक राज बेहड़ ने अपनी रणनीति में बदलाव के संकेत दिए हैं और उनका रुख रुद्रपुर की ओर होता दिखाई दे रहा है। वहीं दूसरी ओर भाजपा से टिकट की तैयारी कर रहे अजय तिवारी ने बड़ा दांव खेलते हुए कांग्रेस का दामन थाम लिया है। सूत्रों के अनुसार, अजय तिवारी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस हाईकमान से मुलाकात कर किच्छा से टिकट की दावेदारी पेश की, जिस पर सहमति बन गई है। कांग्रेस से टिकट की सहमति की खबर के बाद स्थानीय कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। कार्यकर्ताओं का कहना है कि वे अजय तिवारी को विजयी बनाने के लिए दिन-रात एक कर देंगे। मुस्लिम समाज के बीच भी तिवारी की उम्मीदवारी को लेकर सकारात्मक माहौल बताया जा रहा है। समुदाय के लोगों का मानना है कि कांग्रेस एक मजबूत विकल्प के रूप में उभरेगी और किच्छा विधानसभा सीट पर कब्जा जमाने में सफल होगी। इस बीच अजय तिवारी ने अपने बयान में कहा, किच्छा की जनता कांग्रेस चाहती है। मैंने क्षेत्र की समस्याओं को नजदीक से देखा है। यदि पार्टी और जनता का आशीर्वाद मिला तो विकास, रोजगार और सौहार्द को प्राथमिकता दी जाएगी। हमारा लक्ष्य केवल चुनाव जीतना नहीं, बल्कि क्षेत्र का समग्र विकास करना है। मैं सभी वर्गों को साथ लेकर चलने में विश्वास रखता हूं। कुल मिलाकर किच्छा सीट पर मुकाबला दिलचस्प होता जा रहा है। भाजपा और कांग्रेस दोनों दलों के बीच सीधी टक्कर के आसार बनते दिख रहे हैं, जिससे आने वाले दिनों में सियासी तापमान और बढ़ने की संभावना है।

# बेहड़ ने किया रुद्रपुर से चुनाव लड़ने का ऐलान

## 'शेर हो तो रुद्रपुर से लड़कर दिखाओ' की चुनौती पर बेहड़ का नया दांव,सियासत पंडित बोले ठुकराल के डर से भागे बेहड़

रुद्रपुर(होली ब्यूरो)। किच्छा से विधायक तिलक राज बेहड़ ने ऐलान किया है कि वे आगामी 2027 विधानसभा चुनाव रुद्रपुर सीट से लड़ेंगे। उनके इस अचानक फैसले के पीछे नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य की सार्वजनिक टिप्पणी को प्रमुख वजह माना जा रहा है। कुछ दिनों पूर्व रुद्रपुर दौरे पर आए यशपाल आर्य से पत्रकारों ने सवाल किया था कि तराई का शेर कहे जाने वाले बेहड़ कांग्रेस के कार्यक्रम में क्यों नहीं पहुंचे। इस पर आर्य ने तंज कसते हुए कहा था "अगर वे खुद को तराई का शेर मानते हैं तो रुद्रपुर से चुनाव क्यों नहीं लड़ते?" उस समय इस बयान पर कोई तत्काल प्रतिक्रिया नहीं आई, लेकिन राजनीतिक हलकों में यह टिप्पणी लगातार चर्चा का विषय बनी रही। बताया जाता है कि यह बात बेहड़ समर्थकों और उनके करीबी राजनीतिक दायरे में लगातार गूंजती रही। अब रुद्रपुर से चुनाव लड़ने की घोषणा को आर्य की चुनौती का सीधा जवाब माना जा रहा है। सियासी गलियारों में चर्चा है कि बेहड़ ने यह ऐलान कर राजनीतिक संदेश देने की कोशिश की है कि वे चुनौती से पीछे हटने वालों में नहीं हैं। रुद्रपुर विधानसभा सीट को लंबे समय से भाजपा का मजबूत गढ़ माना जाता है। ऐसे में इस सीट से चुनाव लड़ने का ऐलान राजनीतिक रूप से साहसिक कदम माना जा रहा है। हालांकि स्थानीय राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि यह निर्णय भावनात्मक प्रतिक्रिया है या रणनीतिक चाल - इसका आकलन आने वाले समय में ही हो सकेगा। रुद्रपुर सीट का इतिहास भी बेहड़ के राजनीतिक सफर से जुड़ा रहा है। इस क्षेत्र में उनका मजबूत प्रभाव माना जाता था, लेकिन दंगे के बाद बदले राजनीतिक समीकरणों ने उनकी स्थिति प्रभावित की। 2012 के विधान सभा चुनाव में भाजपा उम्मीदवार राजकुमार ठुकराल ने जीत दर्ज कर उन्हें पराजित किया। 2017 में भी ठुकराल के हाथों उन्हें हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद 2022 के चुनाव में बेहड़ ने रुद्रपुर छोड़ किच्छा सीट से चुनाव लड़ा और विधायक बने। तराई क्षेत्र में उनकी पहचान आज भी एक मजबूत जनाधार वाले नेता के रूप में है और समर्थक उन्हें "तराई का शेर" कहकर संबोधित करते हैं। माना जा रहा है कि इसी छवि को ध्यान में रखते हुए यशपाल आर्य की टिप्पणी ने सियासी बहस को नया मोड़ दिया। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि यदि बेहड़ वास्तव में रुद्रपुर से मैदान में उतरते हैं तो मुकाबला बेहद रोचक हो सकता है। भाजपा के लिए अपनी परंपरागत सीट बचाने की चुनौती होगी, जबकि कांग्रेस के भीतर भी सीट को लेकर रणनीतिक पुनर्संतुलन की जरूरत पड़ सकती है। हालांकि 2027 चुनाव में अभी समय है और राजनीतिक समीकरण लगातार बदलते रहते हैं। ऐसे में यह भी संभव है कि परिस्थितियों के अनुसार रणनीति में बदलाव हो। लेकिन फिलहाल तराई की राजनीति में इस ऐलान ने नई चर्चा छेड़ दी है। होली के इस मौसम में जहां गलियों में गुलाल उड़ रहा है, वहीं सियासी मैदान में भी रंग गहरा हो गया है। सबसे बड़ा सवाल यही है -क्या चुनौती ने सचमुच शेर को मैदान में उतार दिया है या यह सियासी होली का जोशीला रंग भर है? जनता की नजर अब आने वाले महीनों पर है, क्योंकि तराई की राजनीति में अगला रंग कौन सा चढ़ेगा, यह वक्त ही बताएगा

# मेयर विकास शर्मा के आगे व्यापार मंडल अध्यक्ष की हो रही बोलती बंद

## व्यापार मंडल अध्यक्ष भी कर रहे मेयर के कार्यों की सराहना

रूद्रपुर (होली संवाददाता)। मेयर विकास शर्मा ने अपने एक वर्ष के कार्यकाल में महानगरवासियों का तो विश्वास जीता ही है साथ ही व्यापारियों के हितों का भी पूरा ध्यान देकर बाजार क्षेत्र में अपनी विकासपरक सोच का परिचय देते हुए तमाम विकास कार्यों को भी करवाकर खुद को व्यापारियों का मसीहा समझने वाले व्यापार मंडल अध्यक्ष की बोलती को भी बंद कर दिया है। मेयर ने सम्पूर्ण बाजार क्षेत्र को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने का जो बीड़ा उठाया है उसे पूरा करने के लिए वह लगातार काम कर रहे है। जिसके तहत सर्वप्रथम उन्होंने बाजार की सभी सड़कों को अतिक्रमण से मुक्त बनाने का अभियान शुरू किया। जिसके विरोध में व्यापार मंडल अध्यक्ष अपने चहेते व्यापारियों व कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के साथ बाधायें उत्पन्न करते रहे। परंतु मेयर के सामने उनकी एक भी नहीं चल पाई। मेयर नगर के व्यापारियों को यह समझाने में पूरी तरह से कामयाब रहे कि अमिक्रमण हटने से जहां बाजार क्षेत्र में आने वाले ग्राहकों को परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा और बिक्री भी बढ़ेगी वहीं सभी के सहयोग से नगर की सुन्दरता भी बढ़ेगी। जिसके बाद अधिकांश व्यापारियों ने स्वयं ही अपनी दुकान के आगे सामान फैलाना बंद कर दिया। आज बाजार में सड़कें भी साफ व सुंदर नजर आने लगी हैं। अब व्यापार मंडल अध्यक्ष भी मेयर के कार्यों की सराहना कर रहे हैं। उनके पास से नगर निगम के खिलाफ सफाई व जर्जर मार्गों के साथ अतिक्रमण के मुख्य मुद्दे छिन गये हैं। मेयर सभी व्यापारियों से निरंतर विचार विमर्श कर उनसे नगर व व्यापारियों की बेहतरी के लिए निरंतर सुझाव भी ले रहे हैं। जिसके बाद से तमाम व्यापारियों का व्यापार मंडल अध्यक्ष के प्रति रूझान भी कम होता जा रहा है। जी 20 शिखर सम्मेलन के दौरान जिन व्यापारियों के प्रतिष्ठानों को अतिक्रमण हटाओ अभियान के दौरान हटा दिया गया था उनमें अधिकांश व्यापारियों को मेयर द्वारा नव स्थापित वेंडिग जोन में दुकानें भी आवंटित कर दी गई हैं। साथ ही शहर में अन्य स्थानों पर उनके द्वारा वेंडिग जोन बनाये जा रहे हैं। बेचारे व्यापार मंडल अध्यक्ष अब करें भी तो क्या करें? निगम के खिलाफ शांत होकर बैठ जाना ही उनकी मजबूरी हो गई है।

# होली पर एसएसपी ने दिया पत्रकारों को तोहफा

रूद्रपुर (होली संवाददाता)। जनपद उधमसिंहनगर में एसएसपी का दायित्व सम्भालने के बाद पत्रकारों से निरंतर मिल रहे सहयोग से खुश होकर एसएसपी अजय गणपति ने जनपद के सभी पत्रकारों को होली का खास तोहफा दिया है। जिसे पाकर जनपद के सभी पत्रकारों ने एसएसपी का नाराजगी के साथ आभार व्यक्त किया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय गणपति का मानना है कि होली पर्व हमेशा से आपसी सौहार्द व सामाज को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाता है। परंतु पिछले कई वर्षों से मदिरा प्रेमियों ने इस पर्व को नशे के साथ मनाना शुरू कर दिया है। जिससे जहां होली पर्व के दौरान हुड़दंग होने लगा है तो वहीं छेड़छाड़ व सड़क दुर्घटनाओं का ग्राफ भी बढ़ता जा रहा है। जो होली पर्व की गरिमा को ठेस पहुंचा रहा है। उन्होंने जनपद आगमन होने के बाद पहले होली पर्व में सभी पत्रकारों को गुलाब के फूलों के साथ अबीर गुलाल के कई पैकेट उपहार स्वरूप भेंट कर सभी से आग्रह किया है कि इस पावन पर्व को मदिरा से दूर करते हुए सभी लोगों को इसके लिए प्रेरित करें। ताकि यह पर्व भविष्य में भी आपसी सौहार्द व साम्प्रदायिक एकजुटता की मिसाल बन सके। वहीं जनपद के पत्रकारों ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के इस तोहफे को तो स्वीकार किया है। परंतु दिल ही दिल में वह एसएसपी के प्रति गुस्से का भी इजहार कर रहे हैं। क्योंकि पूर्व में पुलिस अधिकारियों द्वारा पत्रकारों को हाई क्वालिटी की शराब की बोतल के साथ रंगों व पिचकारियों से भरी पेटी उपहार में दी जाती रही है। लेकिन इस बार पत्रकार इससे वंचित रह गये। इधर कई पत्रकार अपने चहेते पुलिस अधिकारियों पर दबाव बनाकर शराब की बोतलें हासिल करने में कामयाब हो गये हैं। जिसके बाद पुलिस अधिकारियों ने अपने मोबाईल बंद कर अन्य सिम से आवश्यक काम करना शुरू कर दिया है। उनका कहना है कि शराब ठेकेदारों द्वारा उन्हें शराब की जितनी बोतलें उपलब्ध कराई गई थी वह सब बांटी जा चुकी हैं। साथ ही उन्हें यह डर भी सता रहा है कि यदि एसएसपी को इसकी पुख्ता जानकारी मिली तो उनके खिलाफ कार्रवाई भी हो सकती है।

# कालाढूंगी की सियासत में नई धुन-भगत का विश्राम संकेत

## अनिल कपूर डब्बू की तैयारी से चुनावी रंग गहरा

हल्द्वानी/कालाढूंगी(होली ब्यूरो)। होली के रंगों से सराबोर मौसम के बीच कुमाऊँ की राजनीति से एक अहम संकेत सामने आया है। आगामी 2027 विधानसभा चुनाव को लेकर कालाढूंगी सीट पर बदलाव की आहट सुनाई देने लगी है। मौजूदा विधायक बंशीधर भगत ने पार्टी नेतृत्व को पत्र भेजकर अगला चुनाव न लड़ने की इच्छा व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि लंबे समय तक जनता की सेवा करने के बाद अब वे सक्रिय चुनावी राजनीति से विराम लेकर शांत जीवन, आध्यात्मिक साधना और बजरंग बली के भजन-स्मरण में समय बिताना चाहते हैं।उनके इस निर्णय को राजनीतिक गलियारों में एक भावनात्मक लेकिन रणनीतिक संदेश के रूप में देखा जा रहा है। भगत का क्षेत्र में लंबा राजनीतिक प्रभाव रहा है और वे संगठन तथा जनाधार दोनों स्तरों पर मजबूत नेता माने जाते हैं। ऐसे में उनके चुनाव मैदान से हटने की इच्छा ने कालाढूंगी विधानसभा सीट पर उत्तराधिकार की चर्चा तेज कर दी है। भगत के निर्णय के बाद भारतीय जनता पार्टी नेतृत्व ने संभावित विकल्पों पर मंथन शुरू कर दिया है। सूत्रों के अनुसार पार्टी ने मंडी परिषद अध्यक्ष अनिल कपूर डब्बू को चुनावी तैयारी के लिए आगे बढ़ने का संकेत दिया है। संगठनात्मक सहमति के बाद डब्बू ने क्षेत्र में सक्रियता बढ़ा दी है और जनसंपर्क अभियान की रूपरेखा तैयार करनी शुरू कर दी है।बताया जा रहा है कि होली के अवसर पर वे एक भव्य सार्वजनिक मिलन कार्यक्रम आयोजित करेंगे,

जिसमें पूरी विधानसभा क्षेत्र के लोगों को आमंत्रित किया जा रहा है। इस आयोजन को सामाजिक समरसता, जनसंवाद और राजनीतिक संवाद की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है। स्थानीय स्तर पर इसे चुनावी तैयारी की औपचारिक शुरुआत भी माना जा रहा है।कालाढूंगी सीट पर भगत का प्रभाव लंबे समय तक निर्णायक रहा है। उनके समर्थकों का मजबूत नेटवर्क, संगठन में पकड़ और क्षेत्रीय मुद्दों पर सक्रियता ने उन्हें एक सशक्त नेता के रूप में स्थापित किया। ऐसे में यदि वे सक्रिय राजनीति से दूरी बनाते हैं तो भाजपा के सामने चुनौती होगी कि वह अनुभव और जनविश्वास की इस विरासत को नए नेतृत्व के माध्यम से आगे बढ़ाए। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि अनिल कपूर डब्बू को आगे लाकर भाजपा संगठनात्मक निरंतरता के साथ नई ऊर्जा जोड़ने की कोशिश कर सकती है। डब्बू की पहचान संगठन से जुड़े सक्रिय कार्यकर्ता और प्रबंधन क्षमता वाले नेता की रही है, जो क्षेत्र में नए समीकरण बनाने में भूमिका निभा सकते हैं।वहीं विपक्ष भी इस बदलते समीकरण पर नजर बनाए हुए है। कालाढूंगी सीट पर उम्मीदवार बदलने की स्थिति में मुकाबले की प्रकृति बदल सकती है। ऐसे में आने वाले महीनों में राजनीतिक गतिविधियां तेज होने की संभावना है।होली के रंगों के बीच आई इस राजनीतिक हलचल ने कालाढूंगी की सियासत को नई दिशा दे दी है। जहां एक ओर रंगों का त्योहार मेल-मिलाप और नई शुरुआत का संदेश देता है, वहीं दूसरी ओर यहां की राजनीति भी नई धुन पर चलने को तैयार दिखाई दे रही है। अब नजर इस बात पर है कि क्या भगत वास्तव में सक्रिय चुनावी राजनीति से दूरी बना लेते हैं, क्या डब्बू आधिकारिक उम्मीदवार घोषित होते हैं, और कालाढूंगी की जनता इस नए अध्याय को किसरूप में स्वीकार करती है। होली के रंग सूखने के बाद भी यहां की राजनीति में रंग बरकरार रहने वाले हैं -और आने वाला समय बताएगा कि कालाढूंगी की चुनावी धुन किस सुर में बजेगी।

# 'हाथ' छोड़ 'कमल' थामने जा रहे सुमित हृदयेश!

हल्द्वानी(होली ब्यूरो)। उत्तराखंड की राजनीति में भी रंग बदलने की चर्चाएं तेज हो गई हैं। सुमित हृदयेश को लेकर सियासी गलियारों में चर्चा है कि वे आगामी 2027 विधानसभा चुनाव से पहले बड़ा राजनीतिक निर्णय ले सकते हैं। बताया जा रहा है कि वे हल्द्वानी सीट से अपनी राजनीतिक जमीन को और मजबूत करने के साथ नए विकल्पों पर भी मंथन कर रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक, पिछले कुछ समय से वे भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश स्तर के नेताओं से संपर्क साधने की कोशिशों में जुटे रहे हैं। हालांकि अब तक उन्हें कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिला है। राजनीतिक हलकों में चर्चा है कि उन्होंने पुष्कर सिंह धामी से भी मुलाकात का प्रयास किया, लेकिन मुलाकात संभव नहीं हो पाई। इसके बावजूद उनके समर्थक मानते हैं कि सियासत में अंतिम निर्णय समय और समीकरण तय करते हैं। सुमित हृदयेश की राजनीतिक पहचान केवल एक विधायक की नहीं, बल्कि एक प्रभावशाली विरासत के उत्तराधिकारी के रूप में भी है। वे उत्तराखंड की वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व कैबिनेट मंत्री इंदिरा हृदयेश के पुत्र हैं, जिन्हें राज्य की राजनीति में

"आयरन लेडी" के नाम से जाना जाता था। उत्तराखंड राज्य गठन के बाद शासन-प्रशासन और संगठनात्मक राजनीति में उनका गहरा प्रभाव रहा। हल्द्वानी और कुमाऊं क्षेत्र में उनकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि उन्हें जनता का सच्चा जनसेवक माना जाता था। आज भी उनके नाम पर लोगों में सम्मान और भावनात्मक जुड़ाव देखा जाता है। उनका राजनीतिक प्रभाव उस दौर में और मजबूत रहा जब नारायण दत्त तिवारी प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। उस समय उत्तराखंड की राजनीति में उनका दबदबा स्पष्ट दिखाई देता था। सियासी जानकारों का मानना है कि इसी मजबूत विरासत और जनाधार ने 2022 के चुनाव में सुमित हृदयेश को बड़ी ताकत दी। हालांकि केवल विरासत ही उनकी पहचान नहीं है। पिछले कई वर्षों से वे क्षेत्रीय मुद्दों को लेकर लगातार सक्रिय रहे हैं। पेयजल संकट, सड़कों की बदहाली, ट्रैफिक व्यवस्था, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, युवाओं के रोजगार और शहरी सुविधाओं जैसे मुद्दों को उन्होंने मजबूती से उठाया। जनता के बीच उनकी नियमित मौजूदगी और समस्याओं को उठाने की शैली ने उन्हें जुझारू और सुलभ जनप्रतिनिधि की छवि दी। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि यदि वे वास्तव में पाला बदलते हैं तो इसका असर केवल हल्द्वानी तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरे कुमाऊं क्षेत्र की राजनीति में नए समीकरण बन सकते हैं। कांग्रेस के भीतर इस चर्चा से बेचैनी है, क्योंकि हृदयेश परिवार का पारंपरिक जनाधार पार्टी की बड़ी ताकत माना जाता रहा है। वहीं भाजपा में संभावित नए चेहरे को लेकर अंदरूनी हलचल और दावेदारों की रणनीतियां भी तेज हो सकती हैं। हल्द्वानी की राजनीति हमेशा से व्यक्तित्व आधारित रही है, जहां व्यक्तिगत पकड़, परिवारिक विरासत और संगठनात्मक समीकरण चुनावी परिणाम तय करते रहे हैं। ऐसे में यदि सियासी रंग बदला तो मुकाबला और दिलचस्प हो सकता है। होली के मौके पर शहर की गलियों में रंग और गुलाल उड़ रहा है, लेकिन राजनीतिक गलियारों में सबसे बड़ा सवाल तैर रहा है ख़ क्या यह सिर्फ अफवाहों का गुलाल है या सचमुच हल्द्वानी की सियासत नया रंग लेने जा रही है? जनता की अपेक्षा साफ है ख़ नेता चाहे किसी भी दल में जाएं, लेकिन विकास, पारदर्शिता और जनसेवा का रंग फीका नहीं पड़ना चाहिए। होली का संदेश भी यही है: रंग बदलें तो खुशियों के लिए बदलें, जनता के भरोसे के लिए नहीं।

# कालाढूंगी में विकास भगत ने बगावत के दिए संकेत

हल्द्वानी/कालाढूंगी(होली ब्यूरो)। होली के रंगों के बीच कालाढूंगी विधानसभा सीट की राजनीति अचानक गर्म हो गई है। बंशीधर भगत द्वारा सक्रिय चुनावी राजनीति से दूरी बनाने और पार्टी द्वारा नए चेहरे को आगे लाने की चर्चाओं के बीच

अब उनके पुत्र विकास भगत ने खुलकर नाराजगी जताई है। उन्होंने संकेत दिए हैं कि यदि उन्हें टिकट नहीं मिला तो वे चुनाव मैदान में उतरने से पीछे नहीं हटेंगे।विकास भगत ने कहा कि उनके पिता ने चुनाव न लड़ने की इच्छा इसलिए जताई थी ताकि नई पीढ़ी को अवसर मिले और वे स्वयं कालाढूंगी से चुनाव लड़कर राजनीतिक जीवन की शुरुआत कर सकें। उनका आरोप है कि इसके बावजूद पार्टी नेतृत्व ने मंडी परिषद अध्यक्ष अनिल कपूर डब्बू को चुनाव की तैयारी करने के संकेत देकर कार्यकर्ताओं की भावना की अनदेखी की है। उन्होंने कहा कि वे बचपन से भारतीय जनता पार्टी से जुड़े रहे हैं और संगठन को मजबूत करने के लिए तन-मन- धन से काम किया है। ऐसे में यदि उन्हें अवसर नहीं दिया जाता तो यह समर्पित कार्यकर्ताओं के साथ अन्याय होगा।विकास भगत ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि पार्टी उन्हें उम्मीदवार नहीं बनाती है तो वे आजाद प्रत्याशी के रूप में चुनाव मैदान में उतरने पर विचार करेंगे। उनके इस बयान ने कालाढूंगी की राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है और संगठन के भीतर संभावित असंतोष की चर्चा तेज हो गई है। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि यदि पारिवारिक विरासत, संगठनात्मक निर्णय और स्थानीय कार्यकर्ताओं की अपेक्षाओं के बीच संतुलन नहीं बना तो यह सीट भाजपा के लिए चुनौतीपूर्ण बन सकती है। वहीं कुछ जानकारों का कहना है कि चुनाव से पहले ऐसे दबाव राजनीतिक रणनीति का हिस्सा भी हो सकते हैं।होली के उल्लास के बीच कालाढूंगी की राजनीति में उभरती यह खींचतान रंगों के त्योहार को और भी राजनीतिक बना रही है। अब देखना होगा कि पार्टी नेतृत्व इस स्थिति को कैसे संभालता है, क्या परिवार और संगठन के बीच सहमति बनती है, या फिर चुनावी मैदान में नया समीकरण जन्म लेता है।

# सांसद भट्ट बोले मुझे बना दो राज्यपाल,शिव को सांसद और विकास को बनाओं विधायक

## मेयर का चुनाव लड़ा दो भारत भूषण चुघ को

रुद्रपुर(होली ब्यूरो)। क्षेत्रीय राजनीति में विधायक शिव अरोड़ा और मेयर विकास शर्मा के बीच चल रही खींचतान से उपजी चर्चाओं के बीच सांसद अजय भट्ट ने एक "राजनीतिक समाधान" सुझाकर माहौल को रोचक बना दिया। बताया जा रहा है कि पार्टी कार्यकर्ताओं की लगातार शिकायतों से व्यथित होकर उन्होंने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के समक्ष अपनी अनोखी राय रखी।सांसद भट्ट ने मजाकिया लहजे में कहा कि उन्हें उत्तराखंड का राज्यपाल बना दिया जाए। उनका तर्क था कि वे विधायक, सांसद और केंद्रीय मंत्री जैसे दायित्व निभा चुके हैं। अब राज्यपाल बनकर वे हिमालय की गोद में रहेंगे और आवश्यकता पड़ने पर हस्ताक्षर करने आ जाया करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि इससे स्थानीय स्तर पर चल रही खींचतान स्वत: समाप्त हो जाएगी।इसी क्रम में उन्होंने सुझाव दिया कि उनके राज्यपाल बनते ही सांसद का पद रिक्त हो जाएगा। उस सीट पर वर्तमान विधायक शिव अरोड़ा को टिकट देकर सांसद बना दिया जाए और उन्हें "कैलाश भेज दिया जाए"। वहीं मेयर विकास शर्मा को

रुद्रपुर विधानसभा से चुनाव लड़वाकर विधायकी का दायित्व दे दिया जाए। मेयर पद खाली होने पर वरिष्ठ समाजसेवी भारत भूषण चुघ (सोनू) को मेयर पद का टिकट देकर चुनाव मैदान में उतार दिया जाए।सांसद के इस प्रस्ताव को सुनकर मौजूद नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच ठहाके गूंज उठे। विधायक शिव अरोड़ा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, वहीं मेयर विकास शर्मा और भाजपा नेता भारत भूषण भी इस "फॉर्मूले" से खासे प्रसन्न नजर आए और समर्थन जताया।चर्चा यह भी है कि होली के अवसर पर दोनों नेता अलग-अलग आयोजन की तैयारी में हैं। एक ओर जहां मेयर विकास शर्मा द्वारा भांग के पकोड़े परोसने की चर्चा है, वहीं भारत भूषण समर्थकों के साथ अलग अंदाज में जश्न मनाने की योजना बना रहे हैं, ताकि होली का उत्साह और राजनीतिक गर्माहटख़दोनों का "समाधान" हो सके।फिलहाल सांसद के इस हल्के-फुल्के बयान ने सियासी माहौल को रंगीन जरूर कर दिया है, लेकिन यह देखना दिलचस्प होगा कि इस सुझाव पर आगे क्या सियासी रंग चढ़ता है।

# कांग्रेस के आदेश कमल पर सवार,भाजपा ने गरमाई जसपुर की सियासत,सिंघल भी तैयार

जसपुर(होली ब्यूरो)। होली का रंग चढ़ते ही जसपुर की सियासत भी पूरी तरह रंगीन होती दिखाई दे रही है। नगर के कांग्रेस विधायक आदेश चौहान को लेकर इन दिनों ऐसी चर्चाएँ उड़ रही हैं कि वे अब "हाथ" छोड़कर "कमल" थामने की तैयारी में हैं। कहा जा रहा है कि वे आगामी 2027 विधानसभा चुनाव भाजपा के टिकट पर लड़ने का मन बना चुके हैं और नई सियासी पिच पर बल्लेबाजी की तैयारी चल रही है। होली के इस मौसम में उड़ती राजनीतिक गुलाल के बीच यह भी सुनने में आ रहा है कि चौहान समर्थकों ने पहले से ही रंगों का स्टॉक दो हिस्सों में बाँट लिया है ख़ लाल-हरे रंग कांग्रेस के लिए और भगवा रंग संभावित नए सफर के स्वागत के लिए। वहीं विरोधी खेमे का कहना है कि यह सब "राजनीतिक अबीर-गुलाल" है, जो होली के बाद अपने-आप धुल जाएगा। चाय की दुकानों और चौपालों पर चल रही मजाकिया चर्चाओं में एक और "रंगीन विश्लेषण" जुड़ गया है। स्थानीय राजनीतिक पंडितों की ठिठोली के अनुसार, पिछले चुनाव में हुआ खर्च अभी तक "वसूल" नहीं हो पाया, और वर्तमान में सत्ता का सट्टा भाजपा के पक्ष में माना जा रहा है। ऐसे में विधायक जी कथित रूप से उस ट्रेन में सवार होना चाहते हैं जिसकी रफ्तार तेज बताई जा रही है। चर्चा यह भी है कि आने वाले समय में सत्ता के साथ

रहकर विकास योजनाओं और राजनीतिक संभावनाओं का "रंगीन लाभ" उठाने की सोच भी इस कथित निर्णय के पीछे हो सकती है। इधर राजनीतिक गलियारों में यह भी कहा जा रहा है कि 2017 और 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतरे डॉ. शैलेंद्र मोहन सिंघल स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। चर्चाओं में यह तक कहा जा रहा है कि यदि आदेश चौहान पाला बदलते हैं तो वे नई राजनीतिक रणनीति के तहत कांग्रेस का रुख कर सकते हैं। जसपुर सीट के बारे में यह भी माना जाता है कि यहां का सामाजिक समीकरण कांग्रेस प्रत्याशी को परंपरागत बढ़त देता रहा है, और 2017 तथा 2022 दोनों चुनावों में कांग्रेस उम्मीदवार को सफलता मिली। कुछ जानकार हँसी- मजाक में कहते सुने गए कि राजनीति में रंग बदलना गिरगिट की मजबूरी नहीं, बल्कि होली की परंपरा है। वहीं समर्थक दावा कर रहे हैं कि यह सब क्षेत्र के विकास के लिए रणनीतिक सोच है, जबकि विरोधी इसे अवसरवादी रंग परिवर्तन बता रहे हैं। हालांकि यह पूरा घटनाक्रम अभी तक सिर्फ चर्चाओं, कयासों और होली की ठिठोली तक सीमित है। न किसी नेता ने आधिकारिक घोषणा की है और न ही किसी दल ने पुष्टि की है। लेकिन इतना तय है कि होली के विशेषांक में इस खबर ने सियासी पिचकारी सेऐसा रंग छोड़ा है कि जसपुर की राजनीति पूरी तरह गुलालमय हो गई है। होली है इसलिए खबर भी रंगीन है!

प्रदेशवासियों को रंगों के पर्व
होली की हार्दिक शुभकामनाएं
भारत भूषण चुघ
प्रदेश सह संयोजक
भाजपा आर्थिक प्रकोष्ठ रूद्रपुर, उत्तराखण्ड


सभी क्षेत्रवासियों एवं व्यापारियों को
रंगो के पर्व होली
की हार्दिक शुभकामनायें
नितिन फुटेला


आप सभी क्षेत्र वासियों को
होली
की
बहुत-बहुत
बधाई
कैलाशी नरेन्द्र सिंह
भाजपा कार्यकर्ता


समस्त क्षेत्रवासियों
को होली पर्व
की हार्दिक
शुभकामनाएँ
गुलशन सिंघी
जिला महामंत्री
कांग्रेस कमेटी,उधमसिंहनगर


समस्त क्षेत्रवासियों को
होली पर्व
की हार्दिक शुभकामनाऐं
Happy Holi
राजेन्द्र सिंह गोल्डी गोराया
नगर मण्डल अध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी,किच्छा


समस्त क्षेत्रवासियों को
होली पर्व
की हार्दिक
शुभकामनाऐं
Happy Holi
विजय अरोरा
नगर अध्यक्ष,देवभूमि व्यापार मंडल,किच्छा


होली पर्व की
राजेश शुक्ला
पूर्व विधायक
संदीप अरोड़ा (सोनू)

समस्त नगर वासियों को
होली पर्व की
हार्दिक शुभकामनायें
भूपेन्द्र चौधरी
(बबलू भाई)
नगर अध्यक्ष कांग्रेस कमेटी, किच्छा
एवं एमडी अनुपम सीनेप्लेक्स


समस्त क्षेत्रवासियों को रंगों के त्यौहार
होली पर्व
की हार्दिक
शुभकामनाऐं
RJ RATHORE
JEWELLERS
सोने-चाँदी की शुद्धता जाँचने
के लिए कैरेट मीटर उपलब्ध
ऑथोराइज्ड-की-रिटेलर
KISNA
PRIMA ART
पहले जांचें, फिर खरीदें
मुख्य बाजार,किच्छा (उधमसिंहनगर)
79833-77144,86992-44244
84490-48006,99276-17513


समस्त क्षेत्रवासियों को
होली पर्व
की हार्दिक शुभकामनाऐं
धर्मराज जायसवाल
वरिष्ठ भाजपा नेता
अंजू जायसवाल
पूर्व पालिका अध्यक्ष, किच्छा


समस्त क्षेत्रवासियों को होली पर्व
की हार्दिक शुभकामनाऐं
संजीव सिंह
वरिष्ठ भाजपा नेता,किच्छा


होली पर्व की
राजीव सक्सेना
पूर्व सभासद एवम प्रभारी
भाजपा आईटी सेल .किच्छा

समस्त क्षेत्रवासियों को
होली पर्व की
हार्दिक
शुभकामनाऐं
अरूण तनेजा
पूर्व सभासद एवं पूर्व अध्यक्ष
कांग्रेस नगर कमेटी,किच्छा


होली पर्व
अभिषेक सक्सेना
प्रतिनिधि,स्वास्थ्य मंत्री मा० धन सिंह रावत
जनपद उधम सिंह नगर


समस्त क्षेत्रवासियों को
होली पर्व की
हार्दिक
शुभकामनाऐं
भूपेंद्र पपनेजा उर्फ बंटी
प्रदेश सचिव,राहुल गांधी यूथ बिग्रेड

प्रदेशवासियों को रंगों के पर्व
होली की हार्दिक शुभकामनाएं
अजय तिवारी
अध्यक्ष,क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ उधमसिंहनगर
एवं पूर्व प्रत्याशी किच्छा विधानसभा क्षेत्र


समस्त क्षेत्रवासियों को
रंगों के त्योहार
होली पर्व
की हार्दिक शुभकामनायें
राजकुमार ठुकराल
पूर्व विधायक,रुद्रपुर
संजय ठुकराल
समाजसेवी


समस्त क्षेत्रवासियों को
होली पर्व की
हार्दिक शुभकामनायें
सीए शिव अरोरा
विधायक,रुद्रपुर विधानसभा


समस्त क्षेत्रवासियों को होली पर्व
की हार्दिक शुभकामनायें
BINDAL HYUNDAI
HYUNDAI
रुद्रपुर में हुण्डई कारों के
एकमात्र अधिकृत विक्रेता
BINDAL ENTERPRISES PVT LTD
Anand Bindal - Managing Director


समस्त क्षेत्रवासियों को होली पर्व की हार्दिक शुभकामनायें
ओम बापू
मशीनरी स्टोर
हरीशचन्द गुम्बर
विशाल गुम्बर
निकट श्री बालाजी मन्दिर, आदर्श कालोनी, रुद्रपुर मो० 9897736739, 05944-245371


समस्त क्षेत्रवासियों को होली
पर्व की हार्दिक शुभकामनायें
राजेश अरोरा 'पप्पल'
तिलक राज अरोरा
अब आपके शहर रुद्रपुर में पहली बार अत्याधुनिक एवं फैन्सी.....
PVC Wall & Ceiling Panels
EESHA TRADERS
SRA, E-2, Kashipur By Pass Road Opp. Police Chowk, Rudrapur


होली पर्व
जय गुरुदेव इण्डस्ट्रीज
बंशीधर गुम्बर
आशु गुम्बर
रोहित गुम्बर
निर्माता- धान थ्रेशर, गेहूँ थ्रेशर, रोटावेटर,
स्ट्रारीपर, हैरो, पैडी हैरो, जीरो ड्रील आदि
C-19/20, इण्डस्ट्रियल इस्टेट, किच्छा बाईपास रोड, रुद्रपुर
Ph.: 05944-243508, 9412034731, 9568880000


समस्त क्षेत्रवासियों को
होली पर्व की
हार्दिक शुभकामनायें
विजय भूषण गर्ग
वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष
एवं कुमाऊं मंडल प्रभारी
प्रदेश अग्रवाल महासभा,उत्तराखण्ड
मै. विजय फिलिंग स्टेशन,लालपुर


समस्त क्षेत्रवासियों को
होली पर्व की
हार्दिक शुभकामनायें
चन्द्रकेश यादव
तिरुपति कन्वेसिंग एजेन्ट
गल्ला मण्डी, रुद्रपुर (ऊ०सिं०नगर) मो० 9412089030
तिरुपति पैडी प्रोडक्टस
नगर पालिका मार्केट, दुकान नं054, रुद्रपुर मो० 9917304466


समस्त क्षेत्रवासियों को होली
पर्व की हार्दिक शुभकामनायें
शेखर जुयाल
सिविल कॉन्ट्रैक्टर
सुरेन्द्र घई
सिविल कॉन्ट्रैक्टर
श्री साँई कन्स्ट्रक्शन
59/3, आवास विकास, रुद्रपुर (ऊधमसिंहनगर)

समस्त क्षेत्रवासियों को
होली पर्व की
हार्दिक शुभकामनायें
सजल अग्रवाल
संजय अग्रवाल
डायरेक्टर
सावित्री देवी इण्डस्ट्रीज
उच्च कोटि चावल के निर्माता
ग्राम कीरतपुर, काशीपुर रोड, महानगर रुद्रपुर मो. 9837076834

# ट्रांजिट कैम्प के बिना मान्यता एक दर्जन स्कूल किये सील

रूद्रपुर(होली ब्यूरो)। पिछले कई वर्षों से शासन प्रशासन व शिक्षा विभाग द्वारा बार बार सभी बिना मान्यता प्राप्त निजी स्कूल संचालकों को नियमानुसार स्कूल संचालन करने की चेतावनी देने के बावजूद भी राज्य में हजारों स्कूल बिना मान्यता के संचालित हो रहे हैं। जिसकी जागरूक नागरिकों व सोशल मीडिया द्वारा बार बार शिकायत करने पर शिक्षा विभाग द्वारा अब जाकर कठोर कार्रवाई की गई है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर शिक्षा विभाग के महानिदेशक द्वारा राज्य के सभी जिलाधिकारियों को इस सन्दर्भ में निर्देश जारी करने के बाद आज प्रात: प्रशासनिक व शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने बिना मान्यता के संचालित हो रहे स्कूलों पर अपना शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। जिला मुख्यालय रूद्रपुर में आज प्रात: से ही प्रशासनिक अधिकारियों की देखरेख में शिक्षा विभाग के अधिकारियों व कर्मियों ने पुलिस संरक्षण में विशेष रूप से ट्रांजिट कैम्प में अभियान शुरू किया। टीम के क्षेत्र में पहुंचने की खबर लगते ही कई स्कूलों में आनन फानन में छुट्टी कर सभी बच्चों को स्कूल से बाहर कर मेन गेट पर ताला लगा दिया गया। टीम के वहां पहुंचने पर जब स्कूल के गेट पर ताला लगा देखा तो टीम ने भी अपना ताला लगाकर स्कूल मान्यता की फाईल के साथ मुख्य शिक्षा अधिकारी कार्यालय पेश होने का नोटिस चस्पा कर दिया। अभियान के दौरान क्षेत्र में जो स्कूल खुले पाये गये उनके संचालकों से स्कूल की मान्यता सम्बंधी पत्रावलियों का अवलोकन किया गया। इस दौरान टीम द्वारा करीब एक दर्जन से अधिक गैर मान्यता संचालित हो रहे स्कूलों को सील कर दिया गया और संचालकों को नोटिस थमाया गया।

# खटीमा में विकास ठप होने के आरोप, कापड़ी निशाने पर

खटीमा(होली ब्यूरो)। होली के माहौल के बीच खटीमा में राजनीतिक चर्चा तेज हो गई है और विकास कार्यों की धीमी गति को लेकर स्थानीय विधायक भुवन कापड़ी के खिलाफ नाराजगी खुलकर सामने आ रही है। नगर और ग्रामीण क्षेत्रों के कई लोगों का कहना है कि क्षेत्र में अपेक्षित विकास नहीं हो पाया, जिससे आम जनता को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि कई मोहल्लों में नालियाँ टूटी पड़ी हैं, सड़कों की स्थिति जर्जर बनी हुई है और जल निकासी की समस्या बरसात के दिनों में और गंभीर हो जाती है। शहर के विस्तार के अनुरूप आधारभूत सुविधाओं का विकास न होने से लोगों में असंतोष बढ़ रहा है। व्यापारियों का कहना है कि खराब सड़क व्यवस्था से बाजार प्रभावित होता है, जबकि युवाओं का मानना है कि क्षेत्र में बड़ी परियोजनाएँ और रोजगार के अवसर नहीं बढ़ पाए हैं। कई लोग पिछले चुनाव परिणामों का जिक्र करते हुए कहते हैं कि यदि राजनीतिक परिस्थितियाँ अलग होतीं तो विकास की गति भी अलग दिखाई देती। चुनाव में हारने के बावजूद पुष्कर सिंह धामी के मुख्यमंत्री बनने और खटीमा से उनके जुड़ाव का भी उल्लेख किया जा रहा है। कुछ नागरिक मानते हैं कि उनका नेतृत्व क्षेत्र के लिए लाभकारी हो सकता था। इसी बीच क्षेत्र के कुछ नागरिकों के बीच यह मांग भी सुनाई दे रही है कि पुष्कर सिंह धामी को आगामी 2027 विधानसभा चुनाव खटीमा से लड़ना चाहिए, ताकि क्षेत्र में विकास कार्यों को नई गति मिल सके। हालांकि विधायक समर्थकों का कहना है कि विकास कार्य एक निरंतर प्रक्रिया है और कई योजनाएँ विभिन्न चरणों में जारी हैं। उनका कहना है कि प्रशासनिक प्रक्रियाओं, बजट स्वीकृति और तकनीकी कारणों से कार्यों में समय लगता है तथा आने वाले समय में परिणाम दिखाई देंगे। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि खटीमा में विकास का मुद्दा आगामी चुनावों में प्रमुख विषय बन सकता है। जनता बेहतर सड़कों, जल निकासी व्यवस्था, आधारभूत सुविधाओं और रोजगार के अवसरों की अपेक्षा कर रही है। होली के अवसर पर उठी यह बहस खटीमा की जनता की बढ़ती अपेक्षाओं और विकास की मांग को स्पष्ट रूप से सामने ला रही है।आने वाले समय में मुद्दा क्षेत्र की राजनीति का केंद्र बन सकता है।

# गुटबाजी के चलते रूद्रपुर व्यापार मंडल इकाई भंग

रूद्रपुर (होली ब्यूरो)। प्रांतीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के रूद्रपुर इकाई में चुनाव के पश्चात से निर्वाचित पदाधिकारियों के मध्य चल रही गुटबाजी की लगातार शिकायतें मिलने के बाद इस मामले को गंभीरता से लेते हुए प्रदेश अध्यक्ष ने रूद्रपुर महानगर इकाई को तत्काल प्रभाव से भंग करते हुए जिलाध्यक्ष को चुनाव की तैयारी शुरू करने के निर्देश दिये हैं। गौरतलब हो कि जब से नगर इकाई के चुनाव सम्पन्न हुए हैं अध्यक्ष के साथ महामंत्री व कोषाध्यक्ष की पटरी मेल नहीं खा रही है। व्यापार मंडल में गुटबाजी चरम सीमा तक पहुंच चुकी है। व्यापारी हितों से जुड़े आयोजित हुए कई आन्दोलनों में महामंत्री व कोषाध्यक्ष की गैरमौजूदगी चर्चा का विषय बनी रही। वहीं व्यापारियों के खिलाफ चलाये जाने वाले विभागीय अभियानों के विरोध में हुए अनेक प्रदर्शनों के समय भी महामंत्री व कोषाध्यक्ष की गैरमौजूदगी बनी रही। इसका एक यह कारण भी है कि महामंत्री व कोषाध्यक्ष भाजपा के समर्थक हैं जबकि अध्यक्ष कांग्रेस के समर्थक हैं। इसके अलावा व्यापार मंडल के पिछले कई वर्षों अध्यक्ष निर्वाचित होने के कारण उनका व्यापारियों में अच्छा खासा विश्वास भी बना हुआ है। उनकी एक आवाज पर सैकड़ों व्यापारी एकजुट हो जाते है। आम व्यापारियों का कहना है कि उन्होंने व्यापारी हितों की रक्षा के लिए पदाधिकारियों को चुना है न कि राजनीति करने के लिए। वहीं प्रदेश अध्यक्ष का कहना है कि व्यापार मंडल पूरी तरह से गैर राजनीतिक संगठन है। इसमें किसी भी प्रकार से राजनैतिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। वहीं राजनैतिक दलों से जुड़े हर निर्वाचित पदाधिकारी के लिए व्यापारी हित पहले होने चाहिए। लेकिन रूद्रपुर इकाई में जिस प्रकार से व्यापार मंडल के कार्यों में राजनैतिक सोच बढ़ती जा रही है उसे उचित नहीं कहा जा सकता है। उन्होंने जिलाध्यक्ष को कहा है कि संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारियों से विचार विमर्श कर चुनाव प्रक्रिया को तत्काल प्रारम्भ किया जाये ताकि महानगर इकाई की नई कार्यकारिणी का गठन हो सके। देश अध्यक्ष के अचानक इस निर्देश से व्यापार मंडल में जहां हड़कम्प मचा हुआ है वहीं नगर के अधिकांश व्यापारियों ने प्रदेश अध्यक्ष के निर्देश का स्वागत करते हुए इसे व्यापारियों के हित में बताया है।

# सिरौली बनी नगर पालिका, सियासत में रंगों की बरसात

किच्छा(होली ब्यूरो)। होली के रंगों के बीच क्षेत्र की राजनीति भी रंगीन हो गई है। पिछले ानबी वर्षों से चली आ रही मांग पर विराम लगाते हुए सिरौली को नगर पालिका बनाने की घोषणा कर दी गई है। जल्द ही यहां चुनाव कराए जाएंगे और सिरौली को अपना अलग अध्यक्ष मिलेगा। घोषणा के साथ ही भाजपा कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल दिखाई दिया। जगह-जगह मिष्ठान वितरण कर खुशी मनाई गई और इसे क्षेत्र के विकास की दिशा में बड़ा कदम बताया गया। वहीं, सिरौली को किच्छा नगर पालिका में शामिल रखने की मांग करने वाले नेताओं और समर्थकों के खेमे में मायूसी देखी जा रही है। नगर पालिका अलग बनने के बाद किच्छा नगर पालिका अध्यक्ष पद के दावेदारों की संख्या में भी भारी इजाफा हो गया है। पहले जहां दो दर्जन से अधिक दावेदार माने जा रहे थे, अब यह संख्या चार दर्जन के पार पहुंचने की चर्चा है। कांग्रेस खेमे में रणनीति को लेकर नई हलचल शुरू हो गई है। सूत्रों के अनुसार कई कांग्रेसी नेता अब किच्छा की बजाय सिरौली नगर पालिका चुनाव पर दांव लगाने की तैयारी में हैं। वहीं सिरौली क्षेत्र में नासिर खेमे ने भी सक्रियता बढ़ा दी है और समर्थक उन्हें संभावित नेतृत्व के रूप में देख रहे हैं। गौरतलब है कि सिरौली को नगर पालिका बनाने को लेकर पिछले पाँच वर्षों से खींचतान चल रही थी। इस दौरान भाजपा और कांग्रेस के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी रहा और आम जनता विकास कार्यों के इंतजार में उलझी रही। अब होली के मौके पर आई घोषणा ने सियासत को नए रंग दे दिए हैं।

# नानकमत्ता में सियासी रंग फीके, प्रेम सिंह राणा की तैयारी पर सवाल ?

नानकमत्ता(होली ब्यूरो)। होली के रंगों के बीच नानकमत्ता की राजनीति को लेकर भी चर्चाएँ तेज हो गई हैं। 2022 विधानसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी गोपाल सिंह राणा से पराजित हुए प्रेम सिंह राणा की चुनावी तैयारी इस बार खास नजर नहीं आ रही-ऐसी चर्चाएँ क्षेत्र में सुनने को मिल रही हैं। स्थानीय राजनीतिक हलकों में कहा जा रहा है कि मैदान में सक्रियता, जनसंपर्क और संगठनात्मक मजबूती के स्तर पर अपेक्षित हलचल दिखाई नहीं दे रही है। गांवों की बैठकों, स्थानीय कार्यक्रमों और जन समस्याओं पर लगातार मौजूदगी को लेकर भी लोग चर्चा करते नजर आते हैं। इसी बीच क्षेत्र में यह भी चर्चा है कि यदि यही स्थिति बनी रही तो गोपाल सिंह राणा एक बार फिर मजबूत दावेदार के रूप में उभर सकते हैं। 2022 की जीत के बाद क्षेत्र में उनकी पकड़ और जनसंपर्क को लेकर समर्थक उन्हें फिर बढ़त में मान रहे हैं। कुछ नागरिकों का कहना है कि चुनावी राजनीति में जमीन पर सक्रियता और जनता से निरंतर संवाद सबसे बड़ा आधार होता है। वहीं दूसरे पक्ष का मानना है कि चुनाव नजदीक आते ही राजनीतिक गतिविधियाँ अचानक तेज हो जाती हैं, इसलिए अभी अंतिम निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी। होली के मौसम में चल रही इन चर्चाओं ने नानकमत्ता की सियासत में रंग तो भर दिए हैं, लेकिन आने वाले समय में असली रंग चुनावी मैदान में ही दिखाई देंगे। फिलहाल जनता देख रही है कि कौन रंग जमाएगा और किसका रंग फीका पड़ेगा।

# अब पत्रकारों को दिखानी होगी डिग्री, सिस्टम में आएगा सुकून

सितारगंज (होली ब्यूरो)। होली के रंगों के बीच पत्रकारिता जगत में भी एक नया रंग घुल गया है। जनहित याचिका पर सूचना मंत्रालय ने बड़ा फैसला लेते हुए बिना शैक्षणिक योग्यता पत्रकारिता करने वालों पर सख्ती के संकेत दिए हैं। मंत्रालय ने राज्य में जांच कमेटी गठित करने के निर्देश दिए हैं और स्पष्ट किया है कि पत्रकारिता से जुड़े व्यक्तियों के लिए न्यूनतम इंटरमीडिएट उत्तीर्ण होना अनिवार्य होगा। कहा जा रहा है कि कमेटी की जांच के बाद "रंग में भंग" डालने वाले फर्जी पत्रकारों की हकीकत सामने आ सकती है। आधुनिक दौर में एंड्रॉयड मोबाइल और सोशल मीडिया अकाउंट मिलते ही कई लोग खुद को पत्रकार घोषित कर देते हैं। संवेदनशील हो या अति संवेदनशील स्थान, कैमरा ऑन और लाइव शुरू!समाज में लंबे समय से चर्चा थी कि कुछ लोग, जो कल तक लेबर, राजमिस्त्री या मैकेनिक का कार्य कर रहे थे, आज सूट-बूट और चश्मा लगाकर इंटरव्यू लेते नजर आ रहे हैं। लोगों के बीच सवाल उठ रहे थे कि आखिर पत्रकारिता की एबीसीडी जाने बिना यह नया अवतार कैसे?बताया जाता है कि इसी मुद्दे को लेकर कुछ जागरूक नागरिक सूचना मंत्रालय की शरण में पहुंचे। मंत्रालय ने मामले का संज्ञान लेते हुए सभी संपादकों और शासन से होली के बाद रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा है। जिला सूचना अधिकारियों से सक्रिय पत्रकारों की सूची भी मांगी गई है।अब देखना यह होगा कि जांच के बाद कितनों के "प्रेस" के रंग पक्के निकलते हैं और कितनों का रंग पानी में बह जाता है। फिलहाल तो पत्रकारिता जगत में यही चर्चा है। "बुरा न मानो होली है, अब डिग्री दिखानी होगी भाई!"

# शहर की सड़कें होंगी 60 मीटर चौड़ी, लगेंगे लाल निशान

सितारगंज( होली ब्यूरो)। शहर का नक्शा बदलने की तैयारी शुरू हो गई है। अब तक लगभग 30-30 फुट चौड़ी सड़कों को बढ़ाकर 30-30 मीटर तक चौड़ा करने की योजना बनाई गई है। इसके लिए लोक निर्माण विभाग के जेई सत्यपाल ने कार्ययोजना तैयार कर एस्टीमेट प्रस्तुत कर दिया है।सड़क चौड़ीकरण की खबर से शहर के विभिन्न मार्गों पर रहने वाले लोगों में हड़कंप मच गया है। स्थानीय निवासियों का आरोप है कि चौड़ीकरण के नाम पर उन्हें उजाड़ा जा रहा है। प्रशासन की ओर से मकानों और दुकानों पर लाल निशान लगाए जाने से लोगों की चिंता और बढ़ गई है।प्रशासन सड़क चौड़ीकरण को लेकर गंभीर नजर आ रहा है और जिम्मेदारी लोक निर्माण विभाग को सौंपी गई है। बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और यातायात दबाव को देखते हुए मुख्य मार्गों को चौड़ा करने का प्रस्ताव तैयार किया गया है। विभाग की योजना के अनुसार सड़क के मध्य से दोनों ओर लगभग 30-30 मीटर तक क्षेत्र को सड़क सीमा में शामिल किया जाएगा।इस प्रक्रिया में बड़ी संख्या में मकान और दुकानें अतिक्रमण की जद में आ सकती हैं। प्रशासन द्वारा इन्हें हटाए जाने के बाद ही चौड़ीकरण कार्य पूरा हो सकेगा। एसडीएम रविंद्र कुमार ने बताया कि कार्ययोजना के अनुसार प्रशासनिक टीम द्वारा होली के दिन सड़क के मध्य से 30 मीटर तक लाल निशान लगाए जाएंगे। लोक निर्माण विभाग के जेई सतपाल सिंह ने बताया कि अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई होली के बाद शुरू की जाएगी।

# 4 मार्च को ठेकों पर फ्री बंटेगी शराब व नमकीन

रूद्रपुर (होली ब्यूरो)। प्रदेश सरकार के निर्देश पर आबकारी विभाग ने इस वर्ष मदिरा प्रेमियों के लिए होली को विशेष उपहार दिया है। जिसके तहत राज्य के सभी अंग्रेजी व देसी शराब के ठेको पर कुछ शर्तों के साथ फ्री में शराब व नमकीन के पैकेट बांटने की व्यवस्था की गई है। यह जानकारी देते हुए आबकारी विभाग के एक कर्मी ने बताया कि इस योजना को इसलिए सार्वजनिक नहीं किया जा रहा है क्योंकि इससे शराब ठेको पर अत्यधिक भीड़ लग जाने से शांति व्यवस्था निश्चित रूप से प्रभावित हो सकती है। उसने बताया कि सभी शराब ठेको पर प्रात: 2 बजे से 10 बजे तक ही सिर्फ उन मदिरा प्रेमियों को फ्री में शराब व नमकीन बांटी जायेगी जो अपना दो माह पूर्व तक कराई गई नसबंदी का प्रमाण पत्र लेकर आयेंगे। ऐसे सभी लोगों को दो बोतल अंग्रेजी या चार बोतल देसी शराब की दी जायेंगी। इसके साथ ही नमकीन के दो पैकेट भी दिये जायेंगे। उसका कहना था कि सरकार की इस योजना का मुख्य उद्देश्य होली के रंगों के साथ राज्य की जनसंख्या को सीमित करना है। सरकार की इस योजना की जानकारी मिलने के बाद तमाम मदिरा प्रेमी सरकारी अस्पताल की ओर दौड़ने लगे हैं। जहां नसबंदी कराने पर उन्हें सरकार की ओर से 2000 हजार रूपये की प्रोत्साहन राशि अलग से भी मिल रही है। यहां जिला चिकित्सालय से मिली जानकारी के अनुसार अभी तक लगभग दो हजार लोगों द्वारा नसबंदी कराकर प्रमाणपत्र व प्रोत्साहन राशि प्राप्त कर ली गई है। जिनमें करीब चार सौ महिलायें भी शामिल हैं। इधर समाजसेवी लोगों ने सरकार की इस दूरदृष्टि योजना की सराहना करते हुए कहा है कि मदिरा का नशा तो चंद घंटों में उतर जायेगा लेकिन योजना का लाभ राज्य को कई वर्षों तक मिलेगा। आज कई मदिरा प्रेमी मुख्यमंत्री की जय जयकार कर रहे हैं और भगवान से आगामी विधानसभा चुनाव में उन्हें फिर से मुख्यमंत्री बनाने की कामना कर रहे हैं।

# अब सिर्फ एक ही रंग से खेली जायेगी होली

देहरादून(होली ब्यूरो)। उत्तराखंड में यूनिफॉर्म सिविल कोड की ऐतिहासिक सफलता के बाद, मुख्यमंत्री ने अब आगामी होली के त्यौहार को लेकर एक और साहसी और चौंकाने वाली घोषणा कर दी है। इसके तहत राज्य में 'यूनिफॉर्म कलर कोड' लागू किया जाएगा। इस नए नियम के अनुसार, अब प्रदेशवासी पारंपरिक रूप से इस्तेमाल होने वाले लाल, हरे, पीले या नीले रंग के बजाय केवल एक ही विशेष 'भगवा रंग' से होली खेलेंगे। इस रंग का चयन सरकार की एक उच्च-स्तरीय समिति ने किया जो यह सुनिश्चित करेगी कि यह रंग पूर्णत: सभी के लिए स्वीकार्य हो। सूत्रों के मुताबिक, इस कदम का मुख्य उद्देश्य रंगों को लेकर समाज में होने वाले 'दृश्य भेदभाव' को पूरी तरह खत्म करना है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया, होली पर अक्सर देखा जाता है कि कौन सा रंग ज्यादा गहरा है या कौन सा रंग महंगा है, इस पर विवाद होता है। एक ही रंग होने से यह विवाद जड़ से खत्म हो जाएगा। मुख्यमंत्री ने स्वयं इस पहल का समर्थन करते हुए कहा, जब प्रदेश एक हो सकता है, तो होली के रंग भी एक क्यों नहीं? प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि यदि कोई व्यक्ति इस नियम का उल्लंघन करते हुए किसी अन्य रंग का प्रयोग करता या बेचता पाया गया, तो उसे 'कलर-जिहाद' गतिविधियों के तहत दंडित किया जा सकता है। पुलिस विभाग को विशेष 'कलर पुलिस' दस्ता बनाने का निर्देश दिया गया है जो बाजारों में रंगों की जांच करेगा और साथ ही, घर-घर जाकर यह सुनिश्चित करेगा कि यूनिफॉर्म रंग का ही प्रयोग हो रहा है। इसके लिए रंगों पर क्यूआर कोड भी लगाए जाएंगे। इस अनोखी पहल ने राज्य के व्यापारियों और आम जनता को धर्मसंकट में डाल दिया है। रंग व्यापारियों का कहना है कि उनके पुराने स्टॉक का क्या होगा? वहीं, कुछ लोगों का मानना है कि इससे भाईचारा बढ़ेगा और फिजूलखर्ची कम होगी। दूसरी ओर, कुछ पारंपरिक होली प्रेमियों का कहना है कि होली तो रंगों के इंद्र धनुषी मेल का ही नाम है, और एक ही रंग से खेलने में वह मजा नहीं आएगा।

# सेटिंग हो गई तो विधायक की कुर्सी दूर नहीं: बाली

**फाइलों में विकास की किरणों से चकाचौंध काशीपुर**

काशीपुर( होली ब्यूरो)। नगर की राजनीति में एक बार फिर हलचल तेज होती दिखाई दे रही है। भारतीय जनता पार्टी के मौजूदा महापौर दीपक बाली को लेकर चर्चा है कि वे 2027 के विधान सभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए नया जुगाड़ लगाने की फिराक में है। राजनीतिक गलियारों में उनकी सेटिंग की चर्चा जोरो पर है और उनकी सेटिंग होते ही विधायक की कुर्सी तक पहुंचना कोई मुश्किल नहीं है। बताया जाता है कि वर्ष 2022 में आम आदमी पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हुए दीपक बाली ने निकाय चुनाव जीतने के बाद कांग्रेस प्रत्याशी द्वारा उनकी सेटिंग का पत्रकार वार्ता में खुलासा किया था। उसके बाद से ही श्री बाली की सेटिंग की चर्चा काशीपुर में ही नही बल्कि पूरे जिले में होनी शुरू हो गई थी। वही श्री बाली ने निकाय चुनाव में जनता से काशीपुर को जलभराव से स्थायी मुक्ति दिलाने और तीव्र विकास कराने का वादा किया था। लेकिन आज तक इस पर कोई कार्य नही हुआ। अपने घोषणा पत्र में उन्होंने कहा था कि जनता यदि उन्हें नेतृत्व सौंपती है तो 90 दिनों के भीतर काशीपुर को विकास की किरणों से चकाचौंध कर देंगे। स्थानीय लोगों की मानें तो चुनाव जीतने के बाद कागजी स्तर पर विकास योजनाओं की भरमार दिखाई देती है। विभिन्न स्थानों पर करोड़ों रुपये की लागत से विकास कार्य स्वीकृत और प्रारंभ किए जाने का दावा किया गया है। हालांकि आम नागरिकों का कहना है कि वास्तविक धरातल पर अपेक्षित परिवर्तन अभी भी अधूरा महसूस होता है, जबकि सरकारी फाइलों में काशीपुर विकास की रोशनी से जगमगाता नजर आता है। सरकारी बजट को खूब ठिकाने लगाया जा रहा है। सूत्रों के अनुसार, महापौर बाली आगामी विधानसभा चुनाव से पहले सैटिंग करने में जुटे हैं, जिसकी बदौलत आसानी से विधायक बन सके। इसके लिये वह बकायदा इंजीनियरों से मिल रहे है। ताकि कोई रिमोट बनवाया जा सके और उसके सहारे पूरा डाटा कैप्चर किया जा सके। इसके लिये श्री बाली शीघ्र ही जापान का दौरा कर सकते है और वहां के इंजीनियरों से ज्ञान ले सकते है। फिलहाल काशीपुर की जनता मेयर दीपक बाली द्वारा किये गये वायदों को पूरा होने की उम्मीद लगाये बैठी है लेकिन मेयर अपनी धुन में ही बंशी बजा रहे है, जिसके चलते जनता में रोष व्याप्त है।

# लालकुआं विस सीट से दीपेन्द्र कोश्यारी की टिकट लगभग तय

लालकुआं( होली ब्यूरो)। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। लालकुआं विधानसभा सीट से पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी के भतीजे दीपेंद्र सिंह कोश्यारी की दावेदारी मजबूत मानी जा रही है। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि भारतीय जनता पार्टी से उनका टिकट लगभग तय माना जा रहा है। दीपेंद्र सिंह कोश्यारी पिछले काफी समय से लालकुआं क्षेत्र में सक्रिय रूप से जनसंपर्क कर रहे हैं। वे लगातार गांव-गांव जाकर लोगों से मुलाकात कर रहे हैं और स्थानीय मुद्दों को सुन रहे हैं। हाल ही में आयोजित होली मिलन कार्यक्रम के माध्यम से भी उन्होंने बड़ी संख्या में लोगों से संवाद स्थापित किया और क्षेत्र में अपनी राजनीतिक उपस्थिति मजबूत करने का प्रयास किया। सूत्रों के अनुसार, पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी भी चाहते हैं कि उनकी राजनीतिक विरासत और जनसेवा की परंपरा परिवार के माध्यम से आगे बढ़े। इसी क्रम में दीपेंद्र सिंह कोश्यारी को सक्रिय राजनीति में आगे लाने की रणनीति पर काम किया जा रहा है। पार्टी संगठन में उनकी सक्रिय भूमिका और संगठनात्मक अनुभव को भी उनकी दावेदारी की मजबूती के रूप में देखा जा रहा है। दीपेंद्र सिंह कोश्यारी भाजपा संगठन में प्रदेश स्तर पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा चुके हैं और संगठनात्मक कार्यों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही है। कार्यकर्ताओं के बीच उनकी पकड़ और क्षेत्र में बढ़ती सक्रियता को देखते हुए समर्थकों में उत्साह का माहौल है। यदि पार्टी नेतृत्व अंतिम मुहर लगाता है, तो लालकुआं विधानसभा सीट पर मुकाबला दिलचस्प होने की संभावना है। क्षेत्रीय राजनीतिक समीकरणों और सामाजिक संतुलन को देखते हुए यह सीट आगामी चुनाव में खास महत्व रखने वाली मानी जा रही है।

# जमानत जप्त होने का डर: अनुपम

काशीपुर( होली ब्यूरो)। आगामी 2027 विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी हलचल के बीच भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पीसीसी सदस्य अनुपम शर्मा ने अपनी ही पार्टी की स्थिति और अपने घटते जनाधार को लेकर खुलकर चिंता जताई है। पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि काशीपुर में कांग्रेस गुटों में बंटी हुई है और संगठनात्मक एकजुटता का अभाव है, जिसके कारण अधिकांश कार्यकर्ता उनके पक्ष में सक्रिय नहीं हैं। उन्होंने आशंका व्यक्त की कि यदि 2027 के चुनाव में उनकी जमानत जब्त हो गई तो उनका राजनीतिक भविष्य समाप्त हो सकता है। शर्मा ने निकाय, लोकसभा और विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की लगातार पराजय पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि वे इस हार के सिलसिले को रोकने का प्रयास करेंगे, लेकिन यह भी स्वीकार किया कि पार्टी के भीतर ही उन्हें नेता के रूप में स्वीकार नहीं किया जा रहा। उन्होंने यह तक कहा कि यदि उन्हें टिकट मिला तो विरोधी दल नहीं बल्कि अपनी ही पार्टी के लोग उन्हें हराने का काम कर सकते हैं। सबसे विवादास्पद टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश ही नहीं बल्कि देशभर में कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी की "बी पार्टी" की तरह काम करती नजर आ रही है। उनके इस बयान से काशीपुर सहित प्रदेश की राजनीति में नई बहस छिड़ गई है और अब निगाहें पार्टी नेतृत्व की प्रतिक्रिया पर टिकी हैं।

# रवि रौतेला ने भाजपा छोड़ी, कांग्रेस की सेवा का निर्णय

अल्मोड़ा( होली ब्यूरो)। भाजपा में दमखम रखने वाले एवं पार्टी के समर्पित पूर्व जिलाध्यक्ष रवि रौतेला ने अचानक ऐसा फैसला लिया है, जिससे सिर्फ भाजपा ही नहीं बल्कि कांग्रेस भी दंग रह गई है। दोनों को सपने में भी ऐसी उम्मीद नहीं थी। मगर यह सच है कि रौतेला ने भाजपा छोड़ दी है और अब कांग्रेस की सेवा करने का फैसला लिया है।यहां एक होटल में उन्होंने बकायदा प्रेसवार्ता कर यह ऐलान किया। उन्होंने कहा कि उनके प्रयासों से जिले में भाजपा को काफी सख्त हुई है। भाजपा का हर कार्यकर्ता राजनीति की बारहखड़ी से भली भांति परिचित हो चुका है। अब यहां हर चीज में लाइन लग जाती है और कई बार वह लाभ नहीं उठा पाते। ऐसे में उन्होंने कांग्रेस के बारे में सोचा, तो उनका दिल पसीज गया। मंथन में उन्हें कांग्रेस की दयनीय स्थिति पर तरस आ गया। तो उन्होंने लोकतंत्र के हित में निर्णय लिया कि अब कांग्रेस की सेवा की जाए। इसकी वजह पूछने पर उन्होंने कहा कि कांग्रेस के लोगों के आने से ही भाजपा मजबूत हुई और आज भाजपा को मजबूती देने वाली पार्टी ही कमजोर हो गई। यहीं अन्याय उनसे देखा नहीं गया, तो उन्होंने भाजपा छोड़ बेचारी कांग्रेस को मजबूती प्रदान करने की ठानी। अब वह भाजपा से सीखी राजनैतिक तिकड़मबाजी के अनुभव को कांग्रेस के साथ साझा करेंगे और उसे भाजपा के बराबर खड़ा करके दम लेंगे, ताकि लोकतंत्र मजबूत बने।

# अल्मोड़ा नगर निगम क्षेत्र में विकसित होंगे प्राणी उद्यान: अजय

अल्मोड़ा( होली ब्यूरो)। यहां बाजार समेत पूरे नगर निगम अल्मोड़ा क्षेत्रांतर्गत जल्द ही प्राणी उद्यान विकसित किए जाएंगे। अब आवारा गौवंशीय पशु व कुत्तों समेत बंदर व लंगूर एक छत के नीचे आ जाएंगे। इससे जहां पशु संरक्षण को बल मिलेगा, वहीं पर्यटन विकास होगा। महानगर के लिए यह खुशखबरी मेयर अजय वर्मा ने दी है। उन्होंने पत्रकारवार्ता में इस बात का खुलासा किया। उन्होंने कहा कि काफी समय से महानगर को प्राणी उद्यान के मानकों में लाने के लिए यहां आवारा पशुओं, बंदरों व लंगूरों की संख्या बढ़ाने के प्रयास चल रहे थे। मानक पूरे होने के बाद विस्तृत खाका तैयार कर शासन को भेजा था। जिसे स्वीकृति मिल चुकी है। जल्द ही इसके लिए बजट आवंटित होगा और बजट मिलते ही महानगर में बाजार समेत कई जगह प्राणी उद्यानों का निर्माण शुरू कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि इससे पशु संरक्षण को काफी हद तक बल मिलेगा। लोगों का क्या है, वह तो कैसे भी जी लेंगे। उन्होंने कहा कि इन प्राणी उद्यानों में आवारा गौवंशीय पशुओं, विभिन्न रंगों के कुत्तों, बंदरों व लंगूरों को रखा जाएगा। जगह-जगह प्राणी उद्यान बनने के बाद पर्यटक यहां खिंचे चले आएंगे और पर्यटन विकास में भी योजना सहायक होगी। मेयर ने उक्त योजना की सहायक योजना के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सहायक योजना के तहत बाजार व नगर के मार्गों के दोनों ओर घास उगाई जाएगी, ताकि गौवंशीय पशुओं के लिए चारे की कमी नहीं होने पाए और उन्होंने नगरवासियों से घरों का कचरा रास्तों व बाजार के दोनों ओर फेंक देने की अपील की है, ताकि कंपोस्ट खाद बने और घास की पैदावार अच्छी हो। उन्होंने कहा कि वैसे भी सारे व्यापारी अपनी दुकानों का सामान बाहर तक फैलाकर अतिक्रमण कर रहे हैं, इससे अच्छा है कि इस जगह का इस्तेमाल किया जाए। उन्होंने सभी होटल, रेस्टोरेंट व रिजार्टों को अब अपने संस्थान का बासी व खराब भोजन व बचा खुचा भोजन भी प्राणी उद्यान के इर्द-गिर्द फेंकना होगा, ताकि बंदरों व आवारा कुत्तों के काम आ सके।

## प्रथम पृष्ठ का शेष

**विकास शर्मा को मिलेगी...** लगे हैं। शहर के प्रमुख इंदिरा चौक पर त्रिशूल स्थापित कर उन्होंने धार्मिक -सांस्कृतिक पहचान को नया स्वरूप दिया, इसको लेकर वह रुद्रपुर में ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश देश में चर्चा में आ गए। अब डीडी चौक को "डमरू चौक" के रूप में विकसित करने की तैयारी चल रही है। इसके साथ ही रुद्रपुर में शिव कॉरिडोर विकसित करने की दिशा में भी पहल शुरू कर दी गई है। मेयर विकास शर्मा के कार्यों की चर्चा प्रदेश से लेकर देश तक पहुंच चुकी है। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि भाजपा नेतृत्व उनकी सक्रियता और लोकप्रियता को देखते हुए आगामी विधानसभा चुनाव में रुद्रपुर सीट से उन्हें उम्मीदवार बनाने पर विचार कर रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का करीबी होने के चलते श्री शर्मा को विधायकी का प्रबल दावेदार माना जा रहा है । राजनीतिक विद्वानों का मानना है कि यदि संगठन ने युवा और सक्रिय नेतृत्व पर दांव खेलने का निर्णय लिया तो विकास शर्मा एक मजबूत दावेदार के रूप में सामने आ सकते हैं। फिलहाल, शहर में विकास कार्यों की रफ्तार और बढ़ती लोकप्रियता ने उन्हें चर्चा के केंद्र में ला दिया है। वही दूसरी ओर विधायक शिव अरोड़ा और मेयर विकास शर्मा के बीच 36 का आंकड़ा जगजाहिर है, इसके समाधान के लिए सांसद अजय भट्ट भी मेयर विकास शर्मा को विधायक का टिकट देने की पैरवी कर रहे है, उन्होंने भाजपा हाईकमान को एक पत्र भेज कर एक फार्मूला भी सुझाया है। इस पत्र में सांसद भट्ट द्वारा क्या फार्मूला दिया गया है, इसके लिए हमारे पाठक समाचार पत्र के अंदर के पृष्ठ में खबर देख सकते हैं।

**गंगवार के दबाव में सौरभ...** के नामांकन वाले दिन उनके आवास पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम बैठा दी थी, ताकि वे नामांकन दाखिल करने न जा सकें। यदि वे नामांकन भरने जाते तो उनके घर पर छापेमारी कर अवैध संपत्ति, नकदी और आभूषण जब्त किए जा सकते थे। इसी आशंका के चलते वे नामांकन दाखिल नहीं कर सके।इस घटनाक्रम को लेकर गंगवार उनसे नाराज बताए जा रहे हैं और लगातार उन पर मंत्री पद छोड़ने का दबाव बना रहे थे।श्री बहुगुणा ने समर्थकों से कहा कि दबाव की राजनीति के चलते उन्होंने मंत्री पद से इस्तीफा देने का निर्णय लिया है। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया कि वे 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर अभी कोई अंतिम निर्णय नहीं ले रहे हैं। उन्होंने कहा, "फिलहाल मैंने मंत्री पद से इस्तीफा दिया है, 2027 के चुनाव के बारे में उचित समय पर निर्णय लिया जाएगा।" इस्तीफे के बाद क्षेत्रीय राजनीति में हलचल तेज हो गई है। समर्थक जहां उनके निर्णय पर पुनर्विचार की मांग कर रहे हैं, वहीं राजनीतिक गलियारों में इस घटनाक्रम को आगामी चुनावी समीकरणों से जोड़कर देखा जा रहा है।

**'धाकड़ धामी' ने तैयार किया ...** हाईकमान की चिंता भी बढ़ने की बात कही जा रही है। उधर कांग्रेसी विधायकों के पाला बदलने की सुगबुगाहट से कांग्रेस का प्रदेश नेतृत्व सकते में है ,साथ ही नई दिल्ली स्थित कांग्रेस आला कमान की बेचैनी भी बढ़ गई है। राजनीतिक पंडितों का मानना है कि यदि कांग्रेस में इस प्रकार की टूट होती है, तो 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले प्रदेश की राजनीतिक तस्वीर बदल सकती है। बहरहाल देहरादून से दिल्ली तक चल रही हलचल ने उत्तराखंड की राजनीति को गरमा दिया है।

**बगावत पर झुकी भाजपा...**से कम नहीं था। बता दें कि अरविंद पाण्डे पिछले कुछ समय से बार-बार इशारों-इशारों में मुख्यमंत्री धामी को निशाने पर ले रहे थे। उनकी नाराजगी सार्वजनिक कार्यक्रमों में भी जगजाहिर हो रही थी। पाण्डे को शांत करने के लिए पिछले दिनों प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट उनके निवास पर पहुंचे थे। इस मुलाकात के बाद पाण्डेय की राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन से भी मुलाकात हुई। इसके अलावा पाण्डे ने पूर्व सीएम त्रिवेन्द्र रावत और सांसद अनिल बलूनी के साथ केन्द्रीय मंत्रियों और शीर्ष नेताओं से भी मुलाकात की थी। इस घटनाक्रम ने उत्तराखंड के राजनीतिक गलियारों में खलबली मचा दी है। मुख्यमंत्री और पांडे के बीच का गतिरोध इस फैसले के बाद खत्म होता दिख रहा है, लेकिन इसने पार्टी के भीतर की गुटबाजी को उजागर कर दिया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पार्टी ने बगावत को रोकने के लिए झुकना बेहतर समझा, ताकि होली के समय कोई बड़ा राजनीतिक संकट न खड़ा हो। अरविंद पांडे ने शपथ लेने के बाद कहा यह पार्टी का प्यार है, जो मुझे वापस कैबिनेट में लाया। अब देखने वाली बात यह है कि यह होली मिलन सरकार के कामकाज में कितनी रंगत भर पाता है।

**होली मिलन में रंगों की...** अन्य नेता और कार्यकर्ता रंगों से सराबोर होने के बजाय इधर-उधर भागते और हवा में उड़ते कागजों को पकड़ते नजर आए। देखते ही देखते, पूरा पंडाल होली के रंगों के बजाय पेंडिंग फाइलों, टेंडर नोटिसों और ट्रांसफर लिस्टों से भर गया। एक गवाह ने बताया, ष्हमने सोचा था कि होली मिलन में गिले-शिकवे मिटेंगे, लेकिन यहाँ तो फाइलों के जरिए गिले-शिकवे एक-दूसरे पर बरसाए गए। घटना के बाद, प्रशासनिक गलियारों में हड़कंप मच गया है। मुख्यमंत्री ने इस घटना को 'अनुशासनहीनता' बताते हुए जांच के आदेश दे दिए हैं। वहीं, विपक्षी दलों ने इस पर चुटकी लेते हुए कहा है कि यह पहली बार है जब उत्तराखंड की फाइलों ने इतनी तेजी से 'गति' पकड़ी है। समारोह के आयोजकों को अब फाइलों को छांटने के लिए एक विशेष कमेटी बनानी पड़ रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि कौन सी फाइल अधूरी रह गई और कौन सी फाइल 'रंग' में भीगकर खराब हो गई।

**नेता प्रतिपक्ष आर्य के आवास...**जीवन में भरना ही है। भाजपा सरकार विपक्ष को डराने के लिए ऐसे हथकंडे अपना रही है, लेकिन उन्हें नोटों के बजाय केवल रंग ही मिलेंगे। वहीं, राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह छापेमारी सरकार के लिए उलटी पड़ गई है, क्योंकि इससे विपक्ष को यह कहने का मौका मिल गया है कि उनके पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है। ईडी की टीम खाली हाथ और रंगों से सराबोर होकर वापस लौट गई, और अब यह रेड उत्तराखंड की इस होली का सबसे बड़ा चर्चा का विषय बन गई है।

**सीएम धामी ने किया....** स्थानीय निवासियों के साथ-साथ पर्यटकों पर भी समान रूप से लागू होगा। इस घोषणा के बाद प्रदेश भर में हड़कंप मच गया है। मुख्यमंत्री ने कड़े लहजे में कहा, ष्होली रंगों, उल्लास और भाईचारे का पवित्र त्यौहार है, नशे का नहीं। हमें देवभूमि की परंपराओं का सम्मान करना होगा। इस बार जनता रंग खेलें, नशा नहीं। उन्होंने पुलिस प्रशासन को सख्त निर्देश दिए हैं कि होली के दिन शराब पीकर हुड़दंग मचाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। राज्य की सभी शराब की दुकानें (देशी और विदेशी) होली के एक दिन पहले शाम से लेकर होली के अगले दिन सुबह तक बंद रखने का फरमान जारी कर दिया गया है। इसके साथ ही, होटल और रिसॉर्ट्स में भी होली के दिन शराब परोसने पर रोक लगा दी गई है। इस फैसले ने पर्यटकों और स्थानीय लोगों को धर्मसंकट में डाल दिया है। जहाँ एक ओर विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संगठनों ने इस कदम की जमकर प्रशंसा की है और इसे देवभूमि के लिए एक नजीर बताया है, वहीं दूसरी ओर होटल, बार और पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोगों का मानना है कि इससे पर्यटन पर नकारात्मक असर पड़ सकता है, क्योंकि होली के आसपास काफी संख्या में पर्यटक राज्य में आते हैं। प्रशासन ने इस आदेश को सख्ती से सुनिश्चित करने के लिए विशेष पुलिस टीमें गठित की हैं, जो राज्य की सीमावर्ती क्षेत्रों में वाहनों की गहन जांच करेंगी ताकि पड़ोसी राज्यों से शराब की तस्करी न हो सके। अब देखना यह है कि यह शराब मुक्त होली का प्रयोग कितना सफल रहता है और जनता इसका कैसे स्वागत करती है।

# पूर्व विधायक चीमा ने त्रिलोक के साथ राजनीति से लिया संन्यास

काशीपुर( होली ब्यूरो)। भाजपा विधायक हरभजन सिंह चीमा ने राजनीति से संन्यास लेने का ऐलान कर दिया। मीडिया से रूबरू विधायक ने कहा कि उनके द्वारा पूरे 20 वर्ष तक काशीपुर विधानसभा का प्रतिनिधित्व किया गया। ओवर ऐज होने पर सुपुत्र त्रिलोक सिंह चीमा ने 2022 के चुनावों में भाजपा के टिकट पर धमाकेदार जीत दर्ज की लेकिन विधायक चीमा ने पत्रकारों से कहा कि मौजूदा परिवेश में राजनीति का बहुत विकृत स्वरूप हो चुका है इसलिए वह विधायक त्रिलोक सिंह चीमा के साथ पॉलिटिक्स को सदा सर्वदा के लिए अलविदा कर दिया। उधर विधायक चीमा द्वारा राजनीति से संन्यास लिए जाने के बाद पंजाब में एक्टिव अकाली दल ने चीमा पर नजरें गड़ाए दी है। होली से ठीक पहले विधायक चीमा ने भगवा को अलविदा कर सियासी गलियारे में खलबली मचा दी।

## पाठकों के लिए सूचना

रंगों के पर्व होली की समस्त सुधि पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं। *आज का अंक होली के उपलक्ष्य में मस्ती और मनोरंजन के लिए हैं। आज के अंक में प्रकाशित सभी समाचारों का वास्तविकता से कोई सरोकार नहीं है। इन्हें अन्यथा न लेते हुए सिर्फ मनोरंजन तक ही सीमित रखें । होली के उपलक्ष्य में दिनांक 4.03.2026 को उत्तरांचल दर्पण कार्यालय में अवकाश रहेगा। अगला अंक 5 मार्च 2026को प्रकाशित होगा।

-सम्पादक

संस्थापक-स्व० हरनामदास सुखीजा एवं स्व०तिलकराज सुखीजा

स्वामित्वाधिकारी,प्रकाशक एवं मुद्रक परमपाल सुखीजा द्वारा उत्तरांचल दर्पण पब्लिकेशन्स, श्याम टाकीज रोड,रुद्रपुर,ऊधमसिंहनगर ;उत्तराखण्डद्धसे मुद्रित एवं प्रकाशित

सम्पादक- परमपाल सुखीजा

आरएनआई नं.: UTTHIN/2002/8732 समस्त विवाद रूद्रपुर न्यायालय के अधीन होंगे।

E-mail-darpan.rdr@gmail.com,www.uttaranchaldarpan.in

पफोन-245886(O)245701(Fax),9897427585,9897427586(Mob.)

# पांडे बोले-धामी को तीसरी बार ताज पहनाना अब उनका सपना

## मंत्री बनने से खुश पांडे ने सीएम आवास पर धामी,पासी और भट्ट संग खेली होली

देहरादून(होली ब्यूरो)। होली के रंगों ने इस बार उत्तराखंड की राजनीति को भी पूरी तरह रंग दिया है। कल तक मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की खुलकर आलोचना करने वाले गदरपुर विधायक अरविंद पांडे अब बदले हुए अंदाज में नजर आए। मुख्यमंत्री आवास पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए पांडे ने कहा कि धामी को तीसरी बार मुख्यमंत्री बनते देखना अब उनका सबसे बड़ा सपना बन गया है। पांडे के मुख से यह ऐलान सुनते ही उत्तराखंड की सियासत में ऐसा रंग बदला कि होलियारों के साथ-साथ सियासी पंडित भी दंग रह गए। जो नेता कल तक सरकार पर तीखे तेवर दिखा रहे थे, वही अब धामी के समर्थन में खुलकर मैदान में उतर आए हैं। प्रेस वार्ता में पांडे ने कहा कि उनके और धामी के बीच जितने भी गिले-शिकवे थे, वे अब होली के रंगों में धुल चुके हैं। उन्होंने 2027 विधानसभा चुनाव में धामी को तीसरी बार मुख्यमंत्री बनाने का संकल्प दोहराते हुए कहा कि वे इसके लिए दिन-रात एक कर देंगे।उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि भाजपा के कुछ "बुजुर्ग मार्गदर्शकों" के प्रभाव में आकर उन्होंने पहले सरकार के खिलाफ मोर्चा खोला था, लेकिन अब वे पूरी तरह एकजुट हैं। पूर्व सांसद बलराज पासी का आभार जताते हुए उन्होंने कहा कि उनकी समझाइश के बाद वे धामी के समर्थन में आए और अब कोई उन्हें बरगला नहीं सकता। पत्रकार वार्ता के दौरान पत्रकारों ने पांडे पर तीखे सवालों की बौछार कर दी। राजनीतिक यू-टर्न, पुराने बयान और भविष्य की रणनीति पर सवाल उठे। लेकिन पांडे ने चाचा चौधरी वाले अंदाज में मुस्कुराते हुए कहा होली है!! होली का मजा लो! यह सुनते ही माहौल में ठहाके गूंज उठे और कई सवाल रंगों में घुलकर रह गए। प्रेस वार्ता के बाद मुख्यमंत्री आवास पर होली मिलन कार्यक्रम हुआ। मुख्यमंत्री धामी, पूर्व सांसद बलराज पासी और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट के साथ पांडे ने एक-दूसरे को रंग लगाया, गले मिले और हंसी-मजाक किया। कुछ दिन पहले तक चर्चा में रही राजनीतिक दूरियां गुलाल की तरह उड़ती नजर आईं। फिलहाल तो सियासत में रंग, मिठास और मेल-मिलाप का मौसम है। अब देखना यह होगा कि होली का यह रंग 2027 तक कायम रहता है या अगली चुनावी आंधी के साथ नए रंगों का दौर शुरू होता है।

# 2027 की टिकट पर 'खास' मुहर! गुंजन सुखीजा की एंट्री से गदरपुर में सियासी तापमान हाई

गदरपुर(होली ब्यूरो)। वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर गदरपुर की राजनीति में अभी से आतिशबाजी शुरू हो गई है। खबर है कि गुंजन सुखीजा का नाम विधायक प्रत्याशी के रूप में लगभग "फाइनल" मान लिया गया है। पार्टी सूत्रों की मानें तो उनका यह सियासी उदय यूँ ही नहीं हुआ, बल्कि वे प्रदेश नेतृत्व के खास माने जाते हैं-और राजनीति में "खास" होना कभी-कभी बहुत खास साबित हो जाता है।स्थानीय कार्यकर्ताओं के बीच चर्चा है कि पुष्कर सिंह धामी के करीबी होने का सुखीजा को भरपूर लाभ मिला। उधर भारतीय जनता पार्टी के दफ्तर में उत्साह ऐसा है मानो चुनाव परिणाम पहले ही आ चुका हो। गदरपुर की जनता भी इस सियासी खबर पर अलग-अलग अंदाज में प्रतिक्रिया दे रही है। कोई इसे युवा नेतृत्व का उदय बता रहा है, तो कोई कह रहा है-"राजनीति में मेहनत से ज्यादा नेटवर्किंग जरूरी है!" हालांकि आधिकारिक घोषणा का इंतजार अभी बाकी है, लेकिन सियासी गलियारों में माहौल पूरी तरह चुनावी हो चुका है। अब देखना दिलचस्प होगा कि 2027 की इस 'खास टिकट' की गाड़ी कितनी रफ्तार पकड़ती है और जनता किसे असली हीरो बनाती है। फिलहाल गदरपुर में चर्चा, मुस्कान और हल्की-फुल्की तंज के साथ राजनीति का मौसम सुहाना बना हुआ है।

# पद बड़ा या परिवार?: ब्लॉक अध्यक्ष के व्यस्त शेड्यूल से परेशान पति ने लिखा मुख्यमंत्री को पत्र!

गदरपुर(होली ब्यूरो)। होली के रंगों के बीच राजनीति और पारिवारिक जीवन का एक अनोखा 'रंग' इन दिनों चर्चा का विषय बना हुआ है। मामला गदरपुर की ब्लॉक अध्यक्ष ज्योति ग्रोवर से जुड़ा बताया जा रहा है, जिनकी बढ़ती राजनीतिक व्यस्तताओं ने कथित रूप से उनके पारिवारिक जीवन में हलचल पैदा कर दी है। सूत्रों के अनुसार (और होली की मस्ती में चल रही चर्चाओं के मुताबिक) ब्लॉक प्रमुख बनने के बाद से ज्योति ग्रोवर जनसेवा, बैठकों, निरीक्षणों और विकास योजनाओं में इतनी व्यस्त हो गईं कि उनके पति प्रीत ग्रोवर को समय मिलना कम हो गया। बताया जाता है कि इसी "समय संकट" से परेशान होकर प्रीत ग्रोवर ने अपने जीजा जी एवं क्षेत्रीय विधायक शिव अरोड़ा के माध्यम से मुख्यमंत्री को एक भावनात्मक पत्र लिख डाला।पत्र में कथित तौर पर कहा गया कि "जब से वह ब्लॉक प्रमुख बनी हैं, तब से मुझे पर्याप्त समय नहीं दे पा रही हैं, जिससे हमारे वैवाहिक जीवन में दूरियां बढ़ रही हैं। अतः पारिवारिक संतुलन बनाए रखने हेतु इन्हें पदमुक्त किया जाए।" हालांकि इस पूरे घटनाक्रम को लेकर राजनीतिक गलियारों में तरह-तरह की चर्चाएं हैं। कुछ लोग इसे होली की रंगीन गपशप बता रहे हैं, तो कुछ इसे "जनसेवा बनाम गृहस्थी" की बहस का नया अध्याय मान रहे हैं। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि सार्वजनिक जीवन में सक्रिय महिलाओं को अक्सर घर और दफ्तर के बीच संतुलन साधने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। वहीं कई लोगों ने इसे हास्य-व्यंग्य की नजर से लेते हुए कहा कि "अगर व्यस्तता ही पदमुक्ति का आधार बन जाए, तो आधे जनप्रतिनिधियों को घर बैठना पड़े!" राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह प्रसंग भले ही हल्के-फुल्के अंदाज में सामने आया हो, लेकिन यह समाज में बदलती भूमिकाओं और अपेक्षाओं पर गंभीर प्रश्न भी खड़ा करता है-क्या जनसेवा करने वाली महिलाओं से अब भी पारंपरिक भूमिकाओं की ही अपेक्षा की जाती है?

# मुनी भुसरी ने थामा कांग्रेस का दामन,भाजपा में हलचल

गदरपुर(होली ब्यूरो)। राजनीति में कब कौन किसका हो जाए, कहा नहीं जा सकता। गदरपुर की सियासत में इस बार ऐसा ही दिलचस्प मोड़ आया, जब यूथ मंडल के पूर्व भाजपा अध्यक्ष रहे मुनी भुसरी ने अचानक पाला बदलते हुए भारतीय जनता पार्टी को अलविदा कहकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हाथ थाम लिया।बताया जा रहा है कि मुनी भुसरी यूथ मंडल के जिला अध्यक्ष पद की दौड़ में थे, लेकिन पार्टी से अपेक्षित "राजनीतिक सहयोग" न मिलने पर उनका मन खट्टा हो गया। सूत्रों की मानें तो "मन की बात" मन में ही रह गई फिर क्या था - नाराजगी ने करवट ली और सीधे कांग्रेस कार्यालय का रास्ता पकड़ लिया। उनके कांग्रेस में शामिल होते ही गदरपुर भाजपा खेमे में हलचल मच गई। कुछ कार्यकर्ता इसे "रणनीतिक झटका" बता रहे हैं तो कुछ इसे "व्यक्तिगत निर्णय" कहकर आगे बढ़ जाने की सलाह दे रहे हैं। वहीं चाय की दुकानों पर चर्चा गर्म है कि "राजनीति में कोई स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होता, बस अवसर स्थायी होता है।" कांग्रेस खेमे में मुनी भुसरी का स्वागत पूरे उत्साह के साथ किया गया। पार्टी नेताओं ने इसे "युवा नेतृत्व का कांग्रेस में विश्वास" बताया, गदरपुर की जनता फिलहाल तमाशा देख रही है और सोच रही है कि अगला सियासी सरप्राइज किसके खाते में जाएगा।राजनीति का यह मौसम अभी और रंग दिखा सकता है

# गुरु मां ने रखा होटल इंडस्ट्री में कदम

## गुरुग्राम,गोवा,मुंबई और देहरादून में खोलें फाइव स्टार होटल

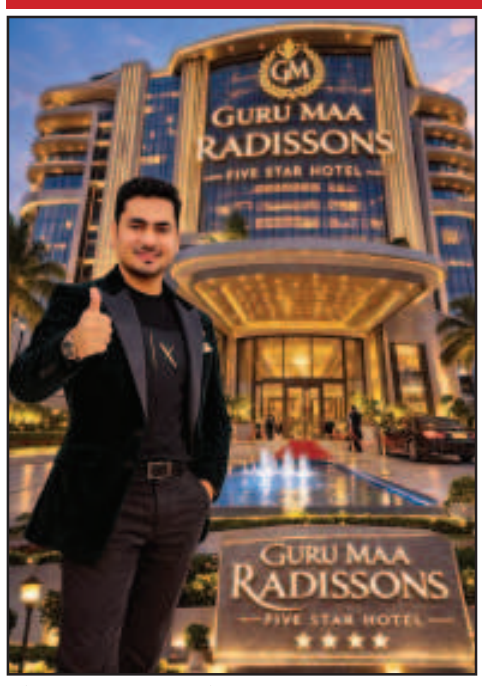


रुद्रपुर(होली ब्यूरो)। उत्तराखंड और यूपी में इलेक्ट्रॉनिक शोरूम के माध्यम से मजबूत पहचान बना चुका गुरु मां इंटरप्राइजेज अब तेजी से नए क्षेत्रों में कदम बढ़ा रहा है। इलेक्ट्रॉनिक सामान के कारोबार में लगातार बढ़ती आय के बाद गुरु मां ग्रुप ने इस कमाई को बड़े निवेश में बदलने की रणनीति बनाते हुए हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में प्रवेश किया है। इसी कड़ी में ग्रुप ने छोटे शहरों के बजाय देश के प्रमुख शहरों-गुरुग्राम, गोवा, मुंबई और देहरादून-में फाइव स्टार होटलों की शुरुआत कर अपनी नई पहचान बनाई है। गुरु मां ग्रुप के एमडी अभिमन्यु ढींगरा ने बताया कि कंपनी ने देश के प्रमुख शहरों में स्थित रेडिसन होटल खरीदकर उनका नाम बदलकर "गुरु मां रेडिसन्स" कर दिया है। इन होटलों का शुभारंभ सदी के महानायक अमिताभ बच्चन द्वारा किया गया, जिससे कार्यक्रम को विशेष आकर्षण मिला। गुरु मां ग्रुप के मुखिया रमेश ढींगरा के अनुसार, चारों होटलों में ग्राहकों को ऐसी प्रीमियम और विशेष सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी, जो अन्य होटलों में आसानी से नहीं मिलतीं। इसके लिए आवश्यक लाइसेंस भी प्राप्त कर लिए गए हैं। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक कारोबार में मजबूत पकड़ बनाने के बाद अब होटल इंडस्ट्री में भी कंपनी अपनी धाक जमाने के लिए तैयार है। ढींगरा ने बताया कि इलेक्ट्रॉनिक सामान के व्यवसाय में अच्छी कमाई होने के कारण उन्होंने सोचा कि इस आय को बड़े निवेश में लगाया जाए। इसी सोच के तहत होटल और फिल्म इंडस्ट्री में उतरने की योजना बनाई गई थी। होटल इंडस्ट्री का सपना अब साकार हो चुका है, जबकि फिल्म इंडस्ट्री में प्रवेश की तैयारी अंतिम चरण में है। उन्होंने बताया कि बहुत जल्द 'गुरु मां' के नाम से नई फिल्म दर्शकों को देखने के लिए मिलेगी।" प्रस्तावित फिल्म में हीरो और हीरोइन की भूमिका उनके पुत्र अभिमन्यु ढींगरा और पुत्रवधू डॉक्टर आंचल ढींगरा निभाएंगे, जबकि खलनायक का किरदार वह स्वयं निभाएंगे। ग्रुप को उम्मीद है कि अगली होली तक देशभर में सोशल मीडिया स्टेटस से लेकर सिनेमाघरों तक "गुरु मां" फिल्म की ओपनिंग चर्चा का विषय बनेगी। कुल मिलाकर, इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर हॉस्पिटैलिटी और अब मनोरंजन जगत तक-गुरु मां ग्रुप अपने विस्तार की कहानी को नए आयाम देने में जुटा है।

# भाजपा की 'होली' में कांग्रेस का 'रंग'

देहरादून(होली ब्यूरो)। उत्तराखंड की राजनीति में होली के दिन उस समय एक अविश्वसनीय दृश्य देखने को मिला, जिसने न केवल कांग्रेस कार्यकर्ताओं को चौंका दिया, बल्कि भाजपा खेमे में भी हड़कंप मचा दिया। राज्य में पारंपरिक 'होली मिलन' समारोहों के बीच, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत अपने समर्थकों के साथ अचानक देहरादून के एक बड़े होटल में आयोजित भाजपा के होली मिलन समारोह में जा पहुंचे। यह देखते ही वहां मौजूद भाजपा के कद्दावर नेताओं ने उन्हें अवाक होकर देखा, लेकिन हरीश रावत मुस्कुराते हुए मंच की ओर बढ़े। सूत्रों के मुताबिक, हरीश रावत ने पहले भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट को गले लगाया और फिर उन्हें पारंपरिक रूप से गुलाल लगाया। इस अप्रत्याशित घटनाक्रम से कांग्रेस के स्थानीय नेता हतप्रभ रह गए, जो कुछ ही देर पहले रावत के साथ अपने ही कार्यक्रम में मौजूद थे। हरीश रावत ने इस मौके पर कहा होली रंगों का त्यौहार है, और रंग में कोई सीमा नहीं होती। मैंने अपने राजनीतिक विरोधियों पर भी प्यार का रंग डाला है। उनके इस बयान ने राजनीतिक गलियारों में चर्चाओं का बाजार गर्म कर दिया है कि क्या हरीश दा कोई नई राजनीतिक बिसात बिछा रहे हैं। भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए यह स्थिति असहज करने वाली थी, लेकिन शिष्टाचार के नाते उन्होंने भी हरीश रावत को गुलाल लगाया। वहीं, कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने इसे रावत की अनोखी शैली बताते हुए पल्ला झाड़ लिया, जबकि विपक्ष के कुछ नेताओं ने इसे अंदरूनी तालमेल का संकेत बताया। इस घटना ने उत्तराखंड की राजनीति में होली के रंग में भंग डालने का काम किया है, और अब हर कोई यह कयास लगा रहा है कि इस रंग का आने वाले दिनों में क्या असर पड़ेगा।

# गदरपुर कोतवाली में हुआ फेरबदल,संजय पाठक बने सीओ

## नरेश पंत को मिली कोतवाल की जिम्मेदारी

गदरपुर(होली ब्यूरो)। पुलिस विभाग में हुए ताजा प्रशासनिक फेरबदल के तहत गदरपुर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक संजय पाठक को पदोन्नत कर सीओ नियुक्त किया गया है। उनके स्थान पर उप निरीक्षक नरेश पंत को गदरपुर कोतवाली का नया कोतवाल बनाया गया है। विभागीय आदेश जारी होने के बाद संजय पाठक ने अपना कार्यभार सौंप दिया। उनके कार्यकाल के दौरान क्षेत्र में कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की जाती रही है। पदोन्नति को उनके कार्यों की मान्यता के रूप में देखा जा रहा है। नव नियुक्त कोतवाल नरेश पंत ने पदभार ग्रहण करते हुए कहा कि क्षेत्र में शांति एवं सुरक्षा उनकी पहली प्राथमिकता रहेगी। उन्होंने पुलिस टीम के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए तथा जनता से सहयोग की अपील की। स्थानीय नागरिकों ने भी उम्मीद जताई है कि नए नेतृत्व में गदरपुर क्षेत्र में कानून-व्यवस्था और अधिक मजबूत होगी।